चन्दामामा
नवंबर १९९४
RS 5

PARLE
Parle-G
Pa

जीवन में भर लो रंग डायमण्ड कामिक्स के संग!

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और अपने जीवन में खुशियों और मनोरंजन की बहार लाएं.

आप केवल नीचे दिये गए कूपन को भरकर और सदस्यता शुल्क के दस रुपये डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में भेज दें।

हर माह छः पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/- रुपये) की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम पांच छः पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हों तो डायमण्ड कॉमिक्स की सूची में से पांच छः पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम पांच से छः पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।

आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें से 5 या 6 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।

इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।

हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ____________________

पता ____________________

____

डाक __________ जिला __________ पिनकोड __________

सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्म ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

डायमण्ड कॉमिक्स मैजिक फन बॉक्स 120 रु. के स्थान पर केवल 60 रु. में प्राप्त करें

- 5 मस्ती डाइमेंशनल कॉमिक्स मूल्य 30/-
- 10 डायमण्ड कॉमिक्स मूल्य 30/-
- 1 लंच बॉक्स मूल्य 20/-
- अनेक आकर्षक उपहार मूल्य 40/-

कुल मूल्य 120/-

1994
चाचा चौधरी का रजत जयंती वर्ष

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

चन्दामामा

नवंबर १९९४

संपादकीय ...७
समाचार-विशेषताएँ ...९
कूड़ा-करकट ...११
भुवनसुंदरी ...१७
शुभ मुहूर्त ...२४
तपस्वी-पतिव्रता ...२५
पुण्यवान ...३२
चन्दामामा परिशिष्ट-७२ ...३३
दोषारोपण ...३७
क्रोध से लाभ ...४२
महाभारत-५ ...४५
भिक्षा-दान ...५३
चन्दामामा की ख़बरें ...५७
पराक्रमी स्त्री ...५८
प्रकृति-रूप अनेक ...६३
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता ...६५

एक प्रति : ५.००

वार्षिक चन्दा : ६०.००

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इतिहास की पढ़ाई

साधारणतया बताया जाता है कि इतिहास बीती घटनाओं का लिपिबध्द संग्रह है। साथ ही यह उन व्यक्तियों की जीवनियों का भी विशद विवरण है, जिनके कारण ये घटनाएँ घटीं, अथवा जिनके मार्ग-दर्शन में या जिनके कारण ये घटनाएँ संभव हो पायीं।

दुर्भाग्यवश वर्तमान विद्यार्थियों के पास इतना समय नहीं कि वे अपनी प्राचीन नागरिकता या अपने देश के इतिहास के संबंध में संपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकें। अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकों की पढ़ाई में ही उनको मग्न रहना पड़ता है; उसी सीमित अध्ययन से उनको तृप्त रहना पड़ता है। इतिहास की कुछ विशिष्ट घटनाएँ मात्र वे जान पाते है, जो उनके पाठ्यक्रम का एक भाग है। वे या तो उन राजाओं के बारे में या उन नायकों के बारे में अथवा उनके जीवन-काल के बारे में ही जान पाते हैं, जिन्होने लड़ाइयाँ लड़ीं, जीते या हारे और कब और कहाँ?

सचमुच उस समय तक इतिहाय की पढ़ाई समाप्त नहीं कही जा सकती, जब तक संसार के प्रधान देशों का इतिहास भी विद्यार्थी जाने। इसलिए पाठ्यक्रम में ऐसे अंश शामिल किये जाएँ, जिनसे वह तुलनात्मक दृष्टि से अन्य और देशों के विकास का अध्ययन कर पाये।

अपने देश के इतिहास के साथ-साथ कम से कम एक और देश के इतिहास को भी पढ़ने तथा जानने का प्रबंध हर वर्ष के पाठ्तक्रम में होना चाहिये और यह अवश्य ही अच्छी पध्दति होगी। पाँचवीं और दसवीं कक्षा के बीच इस व्यवस्था से छह देशों के बारे में उसे ज्ञान प्राप्त करने का अवकाश मिलेगा।

निश्चित रूप से संतुलित पाठ्यक्रम आज की आवश्यकता है।

वर्ष : ४८ नवंबर १९९४ अंक : ३

एक प्रति : रु. ५/- वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

रविवार यानि पियानो, नर्सरी राइम्स
और साथ ही हरपल बस मॉर्टन

MORTON
SWEETS

मुझे रविवार बहुत प्रिय है...... हर समय नर्सरी राइम्स की ताल, मम्मी का साथ और मार्टन का रसभरा स्वाद.

मार्टन मेरे परिवार की सदा से ही पहली पसंद रही है।

उत्कृष्ट शुद्धता और स्वादिष्ट तथा साथ ही अनेकानेक जायकों में उपलब्ध—क्रीमयुक्त दूध, ग्लूकोज़ और चीनी की पौष्टिकता से भरपूर।

चॉकलेट एवं कोकोनट कुकीज़ रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टॉफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स, मैंगोकिंग एवं अन्य अनेकों मनलुभावन स्वादों में उपलब्ध।

आहा! क्या लाज़वाब स्वाद!

जीवन का अनुपम माधुर्य

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड
मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार

समाचार - विशेषताएँ

श्रीलंका में परिवर्तन

श्रीमती चंद्रिका कुमारी श्रीलंका की वर्तमान प्रधान मंत्री हैं। ये भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती बंडारनायके की पुत्री हैं। ये द्वितीय महिला प्रधान मंत्री हैं।

१९५९ में तत्कालीन प्रधान मंत्री एस.डब्ल्यू. आर.डी. बंडारनायके की हत्या हुई। इस कारण उनकी श्रीमती सिरिमावो बंडारनायके १९६० में प्रधान मंत्री बनीं। ये संसार की प्रथम महिला प्रधान मंत्री थीं। वे १९६० से १९६५ तक तथा १९७० से १९७७ तक इस पद को संभालती रहीं। १९७२ में जो चुनाव हुए, उसमें श्रीलंका फ्रीडम पार्टी युनैटेड नेशनल पार्टी के हाथों हार गयी। इस पार्टी का नेतृत्व कर रहे थे जे.आर. जयवर्धने।

युनैटेड नेशनल पार्टी लगातार सत्रह सालों तक शासन भार संभालती रही। पिछले अगस्त में संपन्न आम चुनावों में वह हार गयी। विरोधी पक्ष पीपुल्स अलियन्स ने अल्प अधिकता से जीत पायी। अलियन्स श्रीलंका फ्रीडम पार्टी में अन्य मित्रपक्ष भी शामिल हुए। युनैटेड नेशनल पार्टीको दस स्थानों की कमी पड़ी। अन्य मित्रपक्षों की सहायता से पीपुल्स अलियेन्स ने श्रीमती चंद्रिका कुमारतुंगा को प्रधान मंत्री के रूप में चुना। अगस्त १९ को इक्कीस मंत्रियों सहित उन्होंने प्रधान मंत्री का पद स्वीकार किया, शासन की बाग़ड़ोर अपने हाथों में ली। श्रीमती सिरिमाओ भी उनके मंत्रिमंडल की एक सदस्या हैं।

भारत के दक्षिण में पानी की बूंद की तरह दीखनेवाला यह द्वीपदेश श्रीलंका वही श्रीलंका है, जिसका उल्लेख रामायण में हुआ है। यह तो सबकी जानी हुई बात है कि अशोक सम्राट ने अपनी पुत्री को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए सिंहल भेजा था। अनुराधापुर के बौद्ध आलय में बुद्ध का दाँत दो हज़ार सालों से सुरक्षित रखा गया है।

श्रीलंका के इतिहास का परिशीलन किया जाए तो हमें मालून होगा कि सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों ने इसपर आक्रमण किया। सत्रहवीं शताब्दी में वह डच के अधीन हुआ। १९४८ में वह ब्रिटिश कामनवेल्थ में स्वतंत्र देश बना। १९७७ में उसने अपने को समाजवादी गणतंत्र राज्य घोषित किया। सिलोन (सिंहल) का नाम छोड़ दिया गया और अपना नामांकरण श्रीलंका के नाम से किया। १९७७ में जो चुनाव हुए और उसके बाद जो संविधान बना, उसके अनुसार श्री जयवर्धने उस देश के अध्यक्ष बने।

१९८९ में यु.एन.पी. ने यद्यपि सत्ता को अपने हस्तगत किया, किन्तु उसके आधिक्य में घटौती हुई। तब तक प्रेमदास जो प्रधान मंत्री थे, अध्यक्ष बने। १९९३ में मई दिवस के अवसर पर जब वे उत्सव में भाग ले रहे थे, तब उनकी हत्या कर दी गयी। फलस्वरूप तत्कालीन प्रधान मंत्री विजयतुंगे अध्यक्ष बने। १९९५ जनवरी में उनकी अवधि पूर्ण होगी। अयक्ष का चुनाव नवंबर में संपन्न होनेवाले हैं।

श्रीलंका के सिंहल बौद्ध अधिक संख्यक हैं। पूर्वी प्रांत में तमिल भाषा - भाषी अधिक हैं। देश की आबादी में तमिलवालों की संख्या पाँच प्रतिशत है। इन दोनों के बीच १९५६ में हिंसात्मक संघर्ष प्रारंभ हुए। १९८३ में संघर्ष ने तीव्र रूप धारण किया। बीस हज़ार से अधिक लोग इन पारस्परिक संघर्षों में मारे गये।

श्रीमती चंद्रिका बंडारनायके की शिक्षा फ्राँस में हुई। राजनीति में रुचि रखनेवाले चित्रपट कलाकार श्री विजयकुमारतुंगा से इनका विवाह हुआ। उन्होंने तमिल नेताओं के साथ अपने संबंध जोड़े और उनकी समस्याओं के परिष्कार का मार्ग प्रशस्त करने की कोशिश में लगे रहे। दोनों जातियों के बीच मैत्री को बढ़ावा देने के कार्य में वे सक्रिय रहे। किन्तु वे १९८९ में मार डाले गये। १९९० में श्रीमती चंद्रिका कुमारतुँगा श्रीलंका फ्रीडम पार्टी में शामिल हुईं। १९९३ में संपन्न क्षेत्रीय चुनावों के बाद वे पश्चिमी क्षेत्र की मुख्य मंत्री बनीं और इसके साथ ही इनके राजनैतिक जीवन का आरंभ हुआ।

कूड़ा - करकट

सीता जितनी सुन्दर है, उतनी ही अच्छी भी है। सौतेली माँ रमणी उसे सताती रहती है, फिर भी सब कुछ सहती हुई वह चुप रह जाती है, अपना मुहं खोलती ही नहीं।

रमणी की बेटी गीता, सीता से जलती है। जब देखो, वह सौतेली दीदी के विरुद्ध कोई ना कोई शिकायत अपनी माँ से करती रहती है और उसे पिटवाती रहती है। ऐसा करने पर ही उसे खुशी होती है, उसे तृप्ति होती है।

रमणी चाहती है कि सीता की शादी एक बदसूरत और गरीब से हो। जब किसी ने ऐसे ही रिश्ते का ज़िक्र किया तो उसने उन्हें अपने घर आने का निमंत्रण दिया। किन्तु यह निमंत्रण का समाचार उन्हें नहीं, बल्कि किसी दूसरे को मिला। निमंत्रण पाकर जो आये थे, वे और लोग थे। दुल्हा देखने में बहुत सुँदर लग रहा था। यह भी जानने में आया कि वह संपन्न घराने का है। यह जानते ही रमणी ने सीता के बदले गीता को दिखाया। गीता दुल्हे को अच्छी लगी। लेकिन अतिथियों के सत्कार में मग्न सीता को दुल्हे ने देख लिया। उसने स्पष्ट कह दिया कि शादी करूँगा तो सीता ही से करूँगा।

सीता के बारे में रमणी ने बुरी-बुरी बातें कहीं। किन्तु दुल्हा अपने निर्णय पर डटा रहा। उसने दुहराया कि शादी करूँगा तो सीता से ही करूँगा। इस क्लिष्ट परिस्थिति से अपने को बचाने के लिए रमणी ने उन्हें यह आश्वासन देकर भेज दिया कि सोच-विचार के बाद खबर भेजूँगी।

जो हुआ, रमणी उसपर ईर्ष्या के मारे जल उठी और अपनी बेटी गीता से बोली ''जब तक यह डायन हमारे घर में रहेगी, तुम्हारी शादी नहीं होगी। आज रात को इसके चेहरे पर गरम तेल उँड़ेल दूँगी। बस, यह बदसूरत हो जायेगी, तभी मेरा दिल ठंडा होगा।'' अपनी माँ की बातों से खुश होती हुई गीता ने कहा ''तुम ऐसा करोगी तो दीदी से मैं ही ज़्यादा सुँदर हो जाऊँगी''।

राम यादव

सीता ने ये बातें सुन लीं। वह डर गयी। रात को उसने घर छोड़ दिया और समीप ही के एक जंगल में आ गयी। चलते-चलते वह थक गयी। एक पेड़ के नीचे विश्राम किया और वहीं बेसुध सो गयी।

सबेरे जब वह जागी तो उसने देखा कि विकृत आकार का एक व्यक्ति पेड़ के पास पहरा दे रहा है। उसने बताया कि रात को एक बाघ उसपर लपटने ही वाला था कि उसने उसे मारकर उसकी जान बचायी। उसने यह भी बताया कि इसी कारण वह पहरा दे रहा है। पहरा देने का उसका उद्देश्य उसको बचाने का है। सीता ने उसे धन्यवाद दिया।

''मैं तुम्हें चाहने लगा हूँ। हम दोनों शादी कर लेंगे। शहर जाकर जीवन मज़े से गुज़ारेंगे'' उस विकृत आकार के व्यक्ति ने कहा। सीता कहे भी क्या? उसने उसकी जान जो बचायी। उसने उस व्यक्ति से कहा ''मैं अवश्य ही तुमसे विवाह करती। लेकिन क्या तुम जानते हो, इस जंगल में क्यों आयी हूँ? एक राक्षस से शादी करने की मेरी तमन्ना है। मेरी जन्म-पत्री के अनुसार मेरी शादी राक्षस से ही होगी''। सीता ने कहा।

उस व्यक्ति ने बड़े गर्व से कहा ''वह राक्षस सामने आ जाए तो इस तलवार से उसके टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा और तुमसे शादी करूँगा''।

उस समय वहाँ सचमुच एक राक्षस आया। उसे देखते ही चिल्लाती हुई सीता बेहोश होगयी। बदसूरत उस आदमी ने राक्षस को ग़ौर से देखा और कहा ''छी, मैं कायर थोड़े ही हूँ कि एक राक्षस से लड़ूँ।'' कहता हुआ वह वहाँ से भाग गया।

राक्षस ने सीता की सेवा - शुश्रूषा की और उसे होश में ले आया। उसने कहा ''मुझसे डरो मत। मैं तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ूँगा। जबसे मैंने तुम्हारी बातें सुन ली हैं तब से मैं तुम्हें चाहने लगा हूँ। हम दोनों शादी कर लेंगे''। उसने उसे आश्वासन भी दिया कि हर दशा में मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। तुम्हें अपनी जीवन-संगिनी बनाकर हर प्रकार का सुख दूँगा।

होश में आयी सीता ने अपने को संभाला और राक्षस से कहा ''तुम तो पर्वताकार के राक्षस हो। मैं हूँ एक नन्हीं सी चिड़िया समान। हम दोनों की शादी कैसे संभव है? हम दोनों को देखकर तो कोई भी हँस पड़ेगा''।

"मैं कामरूप विद्या जानता हूँ। तुम्हारे लिए तो मैं अतिसुंदर मानव के रूप में परिवर्तित हो सकता हूँ" कहते हुए वह राक्षस बहुत ही आकर्षक युवक बन गया।

फिर भी सीता का यह भय बना ही रहा। युवक बनकर भी तो वह राक्षस है। उसे उससे छुटकारा पाने का उपाय सूझ नहीं रहा था। वह बोली "माँ के लाड़-प्यार में पली लड़की हूँ। मैं अपनी माँ की स्वीकृति के बिना कोई निर्णय नहीं लेती। तुम्हें मेरी माँ को मनाना होगा"।

राक्षस ने सीता की बात मानी और उसे उसके गाँव ले गया। ले जाते समय उसने देखा कि सीता वेग से चल नहीं पा रही है तो उसने उसे अपनी भुजा पर बिठाया और बड़ी आसानी से उसे पल भर में उसके गाँव ले गया।

सीता तुरंत राक्षस के कंधे से उतरी और घर के अंदर जाकर रमणी से बोली "माँ, कोई राक्षस-सा लगता है। मुझसे शादी करने का हठ कर रहा है। मेरे पीछे पड़ा हुआ है। मेरी रक्षा करो।"

सीता का विश्वास था कि राक्षस भी सौतीली माँओं से डरेंगे। रमणी ने उसकी बातों की परवाह ना करते हुए उसके बाल पकड़ लिये और पूछा "रात भर कहाँ रही?"

इतने में राक्षस घर के अंदर आया और सब कुछ देख लिया। उसने गरजते हुए कहा "अरी बुड्ढी, क्या कर रही हो? सीता को छोड़ दो। उसके बदन पर मक्खी भी हिली तो मक्खी की तरह तुम्हें मसल डालूँगा।"

रमणी ने भयभीत हो उसे छोड़ दिया। फिर राक्षस से पूछा "तुम रोकनेवाले होते कौन हो?

"सब कुछ तेरी ही इच्छा के अनुसार नहीं हो सकता। मैं तुम्हें तीन काम सौंपूंगी। अगर वे काम तुम कर पाओगे तो शादी तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही होगी। अगर तुम विफल रहे तो मेरा कहा तुम्हें मानना पड़ेगा और करना पड़ेगा"। रमणी ने कहा।

"तो एक बात अच्छी तरह याद रखो। घर के कूड़े - करकट के बारे में मुझसे कुछ मत कहना। उस बावत का कोई काम मुझे मत सौंपना। ऐसा करोगी तो नष्ट तुम्हारा ही होगा" राक्षस ने उसे सावधान किया।

रमणी ने उसकी बातों को अनसुनी कर दी, उनकी लापरवाही की। उसने उसे एक बड़ा बरतन दिखाया और कहा कि एक घंटे में उस बरतन को पानी से भर दो।

वह बरतन पुराने ज़माने का था। उन दिनों जब घरों में अधिक भीड़ होती थी तो उसे पानी से भरकर रखते थे। उसे पानी से भरना होगा तो चंद घंटे लग ही जायेंगे। तिसपर कुएँ से पानी खींचना होगा, जो मुश्किल का काम है।

रमणी के कहते ही बरतन को ढकेलता हुआ राक्षस उसे कुएँ के पास ले गया। उसने उस बरतन को दोनों हाथों से पकड़ा और कुएँ में कूद पड़ा। इसके कुछ क्षणों के बाद बरतन को भुजाओं पर ढोते हुए कुएँ से वह बाहर आया। घर के अंदर आकर बोला "सासजी, क्या पानी से भरा बरतन कुएँ के पास ही रहने दूँ ?"

रमणी की समझ में नहीं आया कि वह ऐसा

मेरे ही घर में आकर मुझे ही धमकी दे रहे हो?"

"मैं तुम्हारी बेटी सीता से प्रेम करता हूँ। हमें शादी करने की अनुमति दो। तुम जो भी चाहोगी, दूँगा" राक्षस ने कहा। रमणी तो जानती नहीं थी कि वह राक्षस है, इसलिए उसके सौंदर्य पर मुग्ध होती हुई उसने कहा "तुम मेरी बेटी गीता से शादी क्यों नहीं कर लेते? ऐसा करोगे तो तुम्हारी हर बात मुझे मंज़ूर होगी।"

राक्षस ने ना कहते हुए कहा "पुर्व जन्म में रामबाण से मरा राक्षस हूँ मैं। अपने वचन से मुकरता नहीं हूँ मैं। मेरी शादी होगी तो सीता से ही होगी। प्राण जाए, पर वचन ना जाए, यही मेरा सिद्धांत है"।

सवाल क्यों कर रहा है। वह कुएँ के पास आयी और पानी से भरे बरतन को देखकर हक्का - बक्का रह गयी।

राक्षस हँसता हुआ बोला "बरतन घर के अंदर रखना हो तो बोलो, रख दूँगा। तुम्हारे बताये गये तीन कामों में से मैने एक काम ख़तम कर दिया।

रमणी ने अपने को संभाल लिया और कहा "मान गयी कि तुम काफ़ी बलशाली हो। अब तुम्हारे बुद्धिबल की परीक्षा लेनी होगी। हमारे घर का सामान तितर-बितर पड़ा है। एक घंटे के अंदर घर का सामान जहाँ था, वहीं रखना होगा। क्या तुमसे यह काम हो सकेगा?"

"यह तो बायें हाथका खेल है। थोड़ी देर के लिए आप ज़रा बाहर जाइये और मेरे बुलाने पर ही अंदर आइयेगा" राक्षस ने कहा।

उनके बाहर चले जाने के थोड़े ही क्षणों में राक्षस का बुलावा आया। उन्होंने अंदर आकर देखा कि घर का रूप ही बदल गया है। भारी-भारी चीज़ें, अनाज के बोरे तथा अन्य वस्तुएँ टॉड पर सजा दी गयी हैं। जो चीज़ें दैनिक आवश्यकताओं के लिए ज़रूरी हैं, क़रीने से रख दी गयी हैं। लगता है मानों घर सजाया गया है।

रमणी राक्षस के सामर्थ्य की प्रशंसा मन ही मन करती रही। लेकिन अब भी घर कूड़े - करकट से भरा हुआ था।

रमणी ने कहा "तुमने कब कुछ ठीक किया है। कूड़ा -कूरकट भी तुम्हें निकालकर बाहर फेंकना था। तुमने तो यह काम किया ही नहीं। पर अपने चातुर्य की बड़ी-बड़ी बारें करते हो" उसकी बातों में व्यंग्य कूट-कूटकर भरा हुआ था। यह राक्षस से भी छिपा नहीं था।

"गरजते बादल नहीं बरसते। वचन के अनुसार मेरी माँ जो कहोगी, उसे तुम्हें करना होगा। नहीं कर सकते तो अपनी हार मान लो" गीता ने नाराज़ी से कहा।

तब राक्षस ने रमणी से कहा "अच्छा तो यही है कि अपना - अपना काम स्वयं कर लें। किसी राक्षस को शादी के अवसर पर निमंत्रण दोगे और उससे कहोगे कि जितना चाहो, खा जाओ, तो वह खा जायेगा, कुछ छोड़े बिना। बाकी अतिथि भूखे ही रह जायेंगे। अगर तुम चाहती हो कि तुम्हारा भी काम मैं ही करूँ, तो

कर लूँगा, किन्तु इससे तुम्हें ही नुक़सान पहुँचेगा।''

''घर के अंदर जो कूड़ा-कटकट है, बाहर फेंको। यह तीसरा काम भी कर पाओगे, तभी तुम विजयी कहलाओगे'' रमणी ने हठपूर्वक कहा। उसे विश्वास था कि यह काम राक्षस नहीं कर पायेगा।

राक्षस हँस पड़ा और बोला ''मेरी दृष्टि में इस घर का कूड़ा-करकट तुम और तुम्हारी बेटी हो। ''कहते हुए उसने दोनों हाथों से दोनों को बाहर फेंका और सीता से कहा ''मैंने तो उन्हें इतने ज़ोर से फेंका है कि अब तक उनके प्राण-पखेरू उड़ गये होंगे। अगर जीवित भी रहें तो इस तरफ़ झाँककर भी नहीं देखेंगे''।

आश्चर्य से सीता उसी को देखती हुई बोली ''तुममे उन्हें मारने की शक्ति है, फिर भी मेरी सौतीली माँ के सौंपे तीनों काम तुमने क्यों किये ?''

राक्षस बोला ''मैं तुम्हें चाहता हूँ। तुमने तो कहा था कि माँ की अनुमति के बिना हमारी शादी नहीं होगी। तुम्हारे लिए ही मैंने उनके बताये सारे काम किये। किन्तु कूड़े - करकट के बारे में मैंने पहले ही उन्हें सावधान किया था। मुझे अच्छी तरह से मालून था कि मूर्ख तथा अत्याचारी चेतावनी की लापरवाही करते हैं और भविष्य में आनेवाले ख़तरे से अपने को बचाने की कोशिश नहीं करते। उनकी बुद्धि बैठ जाती है, मारी जाती है। इसीलिए मैंने उन्हीं के मुँह से ऐसा काम मुझसे करवाने को कहा, जिससे मेरे हाथों उनका अंत हो जाए। अब तो समझ गयी हो ना, मैंने ऐसा क्यों किया ?''

सीता ने सर हिलाकर बता दिया कि मैं समझ गयी। सौतेली माँ मनुष्य जन्म लेकर भी उसपर गरम तेल उँड़ेलकर उसे बदसूरत बनाना चाहती थी और यह राक्षस जन्म लेकर भी उसके लिए कुछ भी करने को तैयार है। उसे लगा कि ऐसे राक्षस से ड़रना निरी मूर्खता है। उसने अति सुँदर रूपवाले उसे युवक से शादी की और सुखमय जीवन बिताया। घर का कूड़ा करकट तो वे लोग होते हैं, जिनकी बुद्धि कुटिल है। ऐसे लोग बुद्धिहीन होते हैं। अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार लेते हैं। यह सत्य प्रमाणित किया राक्षस ने।

भुवनसुँदरी

ट्रोय फ्रिजिया देश का एक नगर था। उस देश का राजा था वर्धन। जब उसकी पत्नी गर्भवती थी तब उसने एक स्वप्न देखा। उसने देखा कि उसकी कोख से एक लूका उत्पन्न हुआ है और उससे निकलनेवाली अग्नि-ज्वालाएँ ट्रोय नगर को जला रही हैं। वह डर गयी और चिल्लाती हुई उठी। उसने अपने पति से सपने के बारे में कहा।

वर्धन के पुत्रों में से ज्ञानी नामक पुत्र भविष्य के बारे में बताने की क्षमता रखता था। वर्धन ने अपने पुत्र से उसकी माता के सपने का ज़िक्र किया। ज्ञानी ने, होनेवाले बच्चे का भविष्य बताते हुए कहा कि पैदा होनेवाले से नगर का ध्वंस होगा, इसलिए अच्छा यहीहोगा कि उसके पैदा होते ही उसे मार दिया जाए।

एक दिन शाम को जब अंधेरा छा गया, तब वर्धन की पत्नी ने एक बच्चे को जन्म दिया। वर्धन ने उस बच्चे को मार ड़ालने की जिम्मेदारी उसके पशुओं की देखभाल करनेवाले प्रमुख को सौंपी। वह पर्वत पर रहकर अपने पशुओं की देखभाल करता था। राजा की आज्ञा का पालन करने वह उस बच्चे को पर्वत पर ले गया।

किन्तु उस बच्चे को मार ड़ालने की उसकी इच्छा नहीं हुई। उसने उस बच्चे को पर्वत की एक चोटी पर छोड़ दिया और घर चला गया। पर वह बच्चा मरा नहीं था। कहीं से एक रीछ आयी और अपना दूध पिलाकर उसे पालती रही। धूप से और सर्दी से उसे बचाती रही।

पाँच दिनों के बाद पशुओं का रखवाला चोटी पर गया और उसने देखा कि रीछ उसका पालन-पोषण कर रही है और बच्चा बिल्कुल सुरक्षित है। यह देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। उसे लगा कि यह दैव माया है। उसे लगा कि बच्चे के भाग्य में मरना लिखा नहीं है। रीछ जब कहीं गयी, तब बच्चे को उसने उठाया और उसे अपने घर ले आया। वह बहुत सुंदर था, इसलिए उसने उसका नाम रखा, मोहन।

मौत से बचा मोहन बड़ा होता गया। बचपन से ही वह अक़्लमंद था, बलवान था और था सुंदर। जब वह बाल्य अवस्था में था, तब चोरों ने उसके पशुओं की चोरी की। मोहन अकेले ही उनपर टूट पड़ा, उन्हें भगाया और अपने पशुओं के साथ घर लौटा।

अपने पास जो बैल थे, आपस में वह उनसे लड़वाता था। लड़ाई में जो बैल जीतता था, उसकी सींग में फूल बाँधता था और जो हारता था, उसकी सींग में सूखी घास बाँधता था। अपने बैलों में से कोई बैल सब बैलों पर विजय पाता था तो उसे दूसरों के बैलों से लड़वाता था। वह कहता था कि मेरे बैल को जो हरायेगा, उसको सोने का गहना भेंट में दूँगा।

ऐडा पर्वत पर मोहन जब चरवाहा बनकर ज़िन्दगी गुजार रहा था तब दैवलोक में एक विचित्र घटना घटी। विवाह के स्थल पर बहुत-से देवता इकट्ठे हुए। उस समय कलहप्रिया नामक एक देवता ने अतिथियों के बीच सोने का एक फल गिराया। उसपर लिखा हुआ था "अत्यंत सुंदरी के लिए" विवाह के अवसर पर आयी हुई तीन देवता स्त्रीयों ने अपने को इस फल को पाने का हक़दार घोषित किया। वे थीं भूपुत्री, बुद्धिमति व कामिनी।

वहाँ ऐसा कोई उपस्थित नहीं था, जो यह निर्णय कर सके कि उनमें से कौन अत्यंत सुंदरी है। इस कारण तीनों सीधे इंद्र के पास गयीं और प्रश्न किया कि हममें से कौन अत्यंत सुंदरी है। उन तीनों ने इंद्र से अपना निर्णय सुनाने का हठ किया।

इंद्र भी यह निर्णय नहीं कर बाया कि इन तीनों में से कौन अति सुंदर है। क्योंकि तीनों की सुंदरता एकसमान थी। इसलिए उसने कहा

"यह निर्णय मुझसे संभव नहीं। ऐडा पर्वत पर चरवाहा मोहन है। वही इसका निर्णय कर पायेगा"।

तीनों अप्सराएँ ऐडा पर्वत पर गयीं। उस समय मोहन पर्वत के ऊँचे शिखर पर अपने पशुओं को चरा रहा था। वे उसके पास आयीं और सोने का फल उसे देती हुई बोलीं "मोहन तुम भी सुंदर हो। अपना फैसला सुनाओ कि हम तीनों में से कौन अत्यंत सुंदरी है। जिन्हें अत्यंत सुँदरी समझते हो, उसे यह फल दो। यह इंद्र की आज्ञा है"।

"मैं तो पशुओं को चरानेवाला साधारण चरवाहा हूँ। मैं देवता सौंदर्य को क्या जानूँ? मुझसे यह फैसला कैसे हो पायेगा? आप चाहें तो फल को तीन टुकड़े करके तुममें बाँट सकता हूँ। मेरी दृष्टि में आप तीनों सुँदरियाँ हैं। ना कोई कम ना कोई ज़्यादा"। मोहन ने अपनी नादानी का नाटक करते हुए उनसे कहा। उसने सोचा कि अपना निर्णय सुनाकर उन्हें क्रोधित क्यों करूँ। उसे यह भी मालूम था कि उनके क्रोध का क्या परिणाम होगा।

"यह इंद्र की आज्ञा है। उनकी आज्ञा का धिक्कार करने से तुम्हारा अहित होगा" यों तीनों ने उसे डराया।

"तब तो निर्णय करूँगा। किन्तु सुनो, मेरा निर्णय तुम्हें स्वीकार करना होगा। यह निर्णय तुममें से किसी के विरुद्ध हो तो मुझपर क्रोधित होना नहीं चाहिये। आख़िर मैं एक साधारण

मनुष्य हूँ। हो सकता है, मेरे निर्णय में त्रुटि हो।" मोहन ने कहा।

तीनों ने अपनी सम्मति दी। उसकी शर्त को स्वीकारा। "तुम तीनों जब एक ही साथ दिखायी देते हो तो निर्णय लेने में मुझे कठिनाई हो रही हैं। इसलिए तुम तीनों दूर जाओ और एक-एक करके मेरे सामने आना" मोहन ने कहा।

तीनों दूर चली गयीं। पहले भूपुत्री उसके पास आयी। अपनी सुँदरता दिखाने वह चारों ओर घूमने लगी और कहती रही "देखो मोहन, अगर मुझे तुमने यह फल दिया तो मैं तुम्हें ऐसा वर प्रदान करूँगी, जिससे किसी भी युद्ध में कोई भी तुम्हें हरा नहीं पायेगा। सौंदर्य और बुद्धि में तुम्हारे बराबर का कोई भी इस संसार में नहीं

रहेगा।''

''मैं तो चरवाहा हूँ। युद्धों से मेरा क्या काम? जय और अपजय का प्रश्न ही कैसा उठेगा?'' मोहन ने कहा।

उसके चले जाने के बाद बुद्धिमति उसके पास आयी। उसने कहा ''हम तीनों में से मैं ही अत्यंत सुंदरी हूँ। तुमने मेरे पक्ष में अपना निर्णय दिया तो तुम्हें संपूर्ण एशिया का राजा बनाऊँगी। संसार भर में तुमसे बड़ा धनवान नहीं होगा, ऐसा वर दूँगी।''

''मैं बख्शीश लेकर इस समस्या को सुलझानेवालों में से नहीं हूँ। क्षमा करना'' मोहन ने कहा।

अंत में कामिनी आयी। उसने कहा ''मोहन, फ्रिजिया भर में तुम्हारा जैसा सुंदर युवक नहीं है। स्पार्टा देश की राजकुमारी भुवनसुँदरी तुम्हारी पत्नी बनने योग्य है। इस लोक भर में उससे अधिक सुँदरी कोई है ही नहीं''।

मोहन ने कहा ''मैने तो उसका नाम ही नहीं सुना है''। ''तुमने उसका नाम सुना नहीं? ग्रीक के समस्त राजकुमार उससे विवाह करने आये हुए थे। किन्तु उसने महाराज के भाई से शादी की। अगर तुम्हें उसे पाने की इच्छा हो तो बताओ तुम्हें मिल जायेगी''। कामिनी ने कहा।

''जब पहले ही उसकी शादी हो चुकी है, तब वह मुझे कैसे मिलेगी?'' मोहन ने पूछा।

कामिनी हँस पड़ी और बोली ''तुम्हें इससे क्या? मैं ऐसा चक्कर चलाऊँगी कि वह तुम्हें देखते ही तुमपर फिदा हो जायेगी और तुमसे शादी करेगी। वह अपना घर, माँ-बाप, पति

आदि सबको छोड़ देगी और तुम्हारे पीछे-पीछे चल पड़ेगी।''

कामिनी की बातें सुनकर उसमें कुतूहल जागा। भुवनसुंदरी के बारे में सुनते ही उसके दिल में गुदगुदी हूई। उसने तो पहले ही निर्णय कर लिया था कि मैं इन अप्सराओं के प्रलोभनों में नहीं फँसूंगा। क्योंकि इनका मन बहुत ही चंचल होता है। पता नहीं चलता कि ये कब खुश रहती हैं और कब नाराज़। किसी भी क्षण ये शाप भी दे सकती हैं। इसीलिये मोहन ने पूछा ''भुवनसुंदरी क्या सचमुच इतनी सुंदर है? ''पागल, वह मुझसे कम सुँदरी नहीं'' कामिनी हँसती हुई-बोली। मोहन ने पूछा ''क्या वादा करोगी कि वह मेरी बनेगी?''

कामिनी ने वादा किया तो मोहन ने सोने का फल उसे दिया। बाक़ी दोनों अप्सराएँ उससे बहुत नाराज़ हुई। किन्तु उन्होंने उसे वचन दे रखा था कि उसके निर्णय के विरुद्ध वे कुछ नहीं कहेंगी। इसलिए वे चुप रह गयीं, शांत रह गयीं।

भुवनसुँदरी सचमुच अपूर्व सुँदरी थी। बड़ी ही सुकुमारी थी। वह साक्षात इंद्र और मानिनी से जन्मी कन्या थी। कहा जाता है कि वह हँस के एक अंडे से पैदा हुई। स्पार्टा के राजा मर्दन ने उसे बचपन से पाला - पोसा था। जब वह विवाह - योग्य बनी, तब ग्रीक के बहुत - से राजकुमार उससे विवाह करने स्पार्टा आये। उस राज्य में आये हुए राजकुमार थे, प्रताप, भूघव, रूपधर आदि। इनमें से एक रूपधर ही था, जो खाली हाथ आया। बाक़ी सब बहुत ही मूल्यवान पुरस्कार ले आये।

मर्दन के सम्मुख विषम समस्या उठ खड़ी हो गयी। वह निर्णय नहीं कर पाया कि इनमें से भुवनसुँदरी का हाथ किसके हाथ दूँ ? किसी योग्य राजकुमार से विवाह के लिए अपनी सम्मति दी, तो हो सकता है, बाकी राजकुमार उससे लड़ पड़ें। इसलिए उसने अपनी पुत्री की शादी किसी से नहीं की। किसी भी के पुरस्कारों को स्वीकार नहीं किया।

रूपधर ही एक ऐसा राजकुमार था, जिसे पहले ही से मालूम हो गया था कि भुवनसुँदरी की शादी उससे नहीं होगी। वह मर्दन के पास गया और बोला "मैं जानता हूँ कि आप दुविधा में हैं। आप मेरी एक सहायता कीजिये। मैं आपको ऐसा उपाय बताऊँगा, जिससे आप इस दुविधा से बच पायेंगे"।

"बताओ, मैं तुम्हारी क्या मदद करूँ? मेरी समस्या का परिष्कार कैसे ढूँढ़ पाओगे?" राजा मर्दन ने पूछा। मर्दन को इस समस्या का परिष्कार तक्षण ही करना पड़ेगा। ऐसा ना होने पर राजकुमार चुप नहीं बैठेंगे। उसपर विवाह के लिए दबाव डालेंगे। हो सकता है, वे उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा भी कर दें। उनसे शतृता मोल लेने से उसका राज्य ही ख़तरे में पड़ जायेगा। जिस पुत्री के सुखमय दांपत्य जीवन की वह कल्पना कर रहा है, वह कल्पना मात्र बनकर रह जायेगी। इसलिए रूपधर की बातों से उसे थोड़ी सांत्वना मिली।

"अपने भाई चंद्रदत्त की पुत्री पद्ममुखी का विवाह मुझसे कराने का वचन दीजिये। फिर आप जिससे चाहते हैं, उससे भुवनसुँदरी का विवाह रचाइये। मैं ऐसा उपाय आपको बताऊँगा, जिससे बाक़ी राजकुमार आपसे लड़ने का ख्याल छोड़ देंगे।" रूपधर ने कहा।

"पहले अपना उपाय बताओ। पद्ममुखी से शादी कराने की जिम्मेदारी मुझपर छोड़ दो।" मर्दन ने वचन देते हुए कहा।

"तो आप ऐसा कीजिये, जैसा मैं कहता हूँ। भुवनसुँदरी से विवाह करने जितने भी राजकुमार आये हैं उन सबको बुलाइये। सबसे शपथ दिलवाइये कि जिसकी शादी भुवनसुँदरी से होगी, उसपर कोई विपत्ति आये, उसकी जान ख़तरे में पड़ जाए तो बाकी सब उसकी

रक्षा करेंगे और भुवनसुंदरी के पति की जान बचाएँगे।

ऐसा करने से उसके विवाह का मार्ग खुल जायेगा और किसी प्रकार के लड़ाई-झगड़े नहीं होंगे।'' रूपधर ने यों अपना उपाय बताया।

उसका उपाय मर्दन को अच्छा लगा। उन्होंने ग्रीक के सब राजकुमारों को बुलवाया और कहा ''आप में से हर कोई भुवनसुँदरी से शादी करने का इच्छुक है। लेकिन वह किसी एक से ही शादी कर सकती है। वह जिससे शादी करेगी, उससे आप में से कोई दुश्मनी मोल लेगा। ईर्ष्यावश उससे लड़ाई करने भी सन्नद्ध हो जाओगे। ऐसी स्थिति में आपकी सहायता उसको चाहिये। आप वादा कीजिये कि आप उसे मदद पहुँचाएँगे। आपके वादे के बाद ही मैं निर्णय लूँगा कि उसका पति कौन होगा''?

सब राजकुमारों ने एकमत होकर शमथ खायी। इसके बाद राजा ने प्रताप के साथ भुवनसुँदरी का विवाह करवाया। विवाह के चंद सालों के बाद राजा मर गया। प्रताप उसके स्थान पर सिंहासन पर आसीन हुआ। वह स्पार्टा का राजा बना।

भुवनसुँदरी के विवाह के साथ-साथ रूपधर और पद्ममुखी का भी विवाह संपन्न हुआ। पद्ममुखी के पिता चंद्रदत्त ने अपने दामाद से कहा ''बेटे, मैं अपनी बेटी से अलग होकर जीवित नहीं रह सकता। अच्छा होगा, तुम भी स्पार्ट में रह जाओ।'' रूपधर ने ससुर की बात नहीं मानीऔर अपनी पत्नी को लेकर नाव में बैठकर इथाका निकल पड़ा।

रोते हुए ससुर का बरताव रूपधर को क़तई पसंद नहीं आया। उसने पत्नी से कहा ''तुम मेरे साथ आना चाहती हो तो आ जाओ। अगर तुम्हारी आने की इच्छा नहीं है तो अपने पिता के साथ ही रहो''।

पद्ममुखी कुछ नहीं बोली। यह देखकर चंद्रदत्त समझ गया कि ग़लती उसी की है; पति के घर जाना ही पत्नी का धर्म है। जहाँ यह घटना घटी, वहाँ उसने अपनी पुत्री की एक प्रतिमा की प्रतिष्ठापना की। वह प्रतिमा स्पार्टा नगर से चार मील दूर अब भी मौजूद है।

- सशेष

शुभ मुहूर्त

गाविंद घर से निकला तो उसके बाहर आते ही किसी ने जोर से छींक मारी। उस छींकनेवाले को मन ही मन गाली देता हुआ घर में जब लौट रहा था, तब उसने देखा कि पड़ोसी परमेश्वर शास्त्री किसी काम पर बाहर जा रहा है, तो उसे आश्चर्य हुआ। शास्त्री छोटा काम ही सही, करने के पहले शुभ मुहूर्त का ध्यान रखता था। किसी जगह जाने के लिए भी यह नियम अवश्य अमल में लाता था। मुहूर्तों का इतना कट्टर जब शास्त्री ही छींक की परवाह किये बिना जब बाहर जाने लगा तो गोविंद ने सोचा, अवश्य ही यह मुहूर्त शुभ ही होगा। इसलिए गोविंद भी अपने कार्य पर निकल पड़ा।

गोविंद जिस कार्य पर गया था, वह सुचारू रूप से संपन्न हुआ। लौटकर वह परमेश्वर शास्त्री को धन्यवाद देने उसके घर गया। उसने शास्त्री से कहा ''आपके ही के कारण मेरा काम सफल हुआ है। आपके ही कारण मैं जान पाया कि यह शुभ मुहूर्त है''।

गाविंद की बातों पर आश्चर्य प्रकट करते हुए परमेश्वर शास्त्री ने कहा ''आजकल अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा हूँ। शायद इसीलिए छींक सुनी नहीं होगी। सच कहा जाए तो जिस काम पर मैं निकला, वहकोई प्रधान कार्य था भी नहीं। दीवार के बग़ल में भोंकते हुए कुत्ते को भगाने के लिए मैं बाहर निकला था। अशुभ वेला में बाहर निकलने थोड़े ही मूर्ख हूँ।''

यह सुनकर गोविंद अवाक् रह गया। इसके बाद उसने शगुनों और मुहूर्तों की परवाह ही नहीं की। उनपर उसका विश्वास उठ गया।

- सुधीर आत्ते
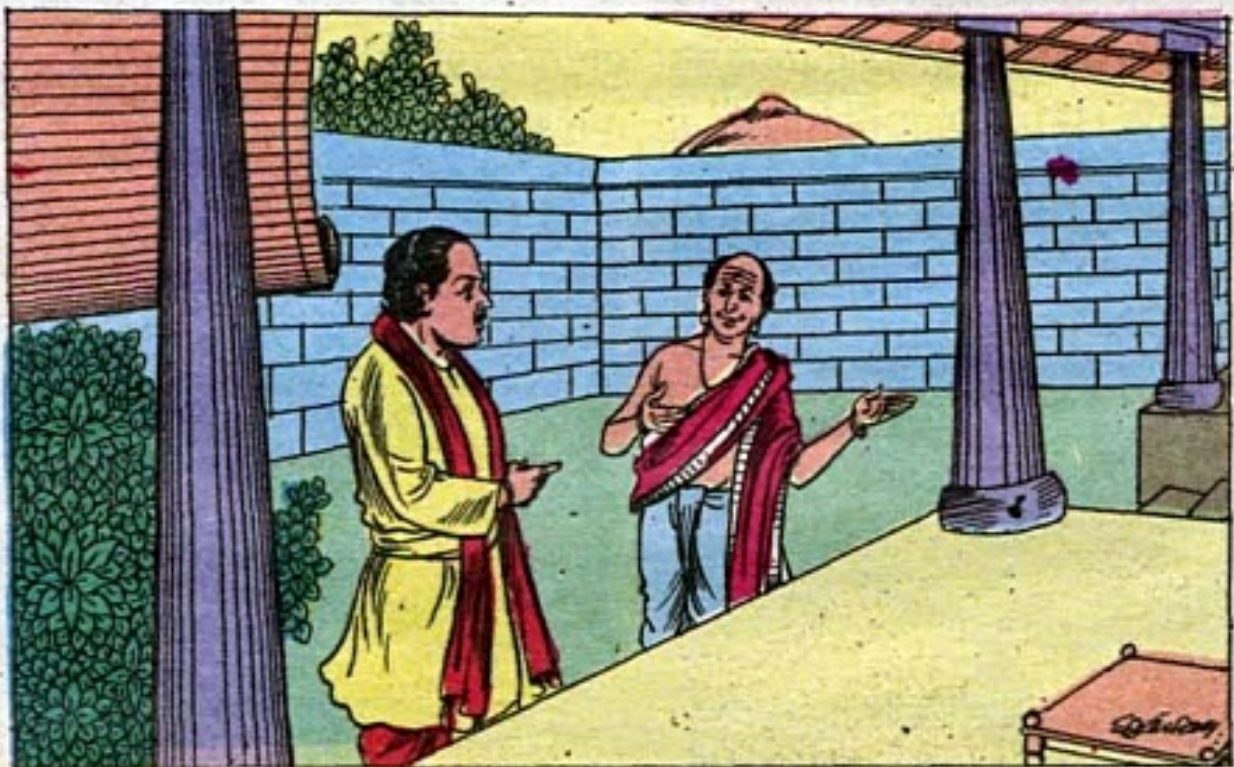
तपस्वी - पतिव्रता

विक्रमार्क अपनी हार माननेवालों में से नहीं था। वह धुन का पक्का था। फिर से वह पेड़ के पास गया , शव को उतारा और उसे अपनी भुजाओं पर ड़ाल लिया। यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता गया। तब शवके अंदर के बेताल ने कहा "राजा, श्मशान का यह वातावरण भयानक है। आधी रात के इस अंधकार में यह वातावरण किसी शूर-वीर के दिल में भी भय उत्पन्न कर देता है। इतने कष्ट झेलते हुए भी तुम अपनी जिद पर अड़े हुए हो। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस लक्ष्य की सिद्धि के प्रयास में तुम रत हो, वह लक्ष्य अवश्य ही महोन्नत होगा। कभी-कभी कुछ साधारण व्यक्ति स्वार्थवश हो तपस्वियों की तपस्या का भंग कर पाते हैं। ये तपस्वी भी असाधारण तपस्वी होते हैं, जो मोक्ष की प्राप्ति के लिए तपस्या - मग्न हैं, जिन्होंने सब कुछ त्याग दिया है। तुम्हें शायद मेरी बातों का

बैताल कथा

विश्वास नहीं होता होगा। तुम शायद यह समझते हो कि साधारण व्यक्ति उत्तम तपस्वी की तपस्या कैसे भंग कर सकता है? मुझे भय है कि तुम्हारी यह तपस्या, लक्ष्य की प्राप्ति की यह धुन किसी दिन लोगों की दृष्टि में हँसी की बात न बन जाए। लोग यह ना कहें कि विक्रमार्क जैसा शूर-वीर और आदर्श राजा भी फिसल गया, अपने मार्ग से हट गया, लक्ष्य की प्राप्ति की धुन में खो गया आदि। इसीलिए तुम्हें सचेत और जागरूक करने एक तपस्वी और पतिप्रता की कहानी सुनाऊँगा। यह कहानी सुनते - सुनते अपनी थकान भी दूर करते जाओ।''

हेमगिरि नामक गाँव में धीर नमक एक युवक था। उसके माता - पिता ने बड़े ही लाड़ - प्यार से उसे पाला - पोसा, जिस वजह से वह दुर्व्यसनों का शिकार हो गया। माता - पिता ने सोचा कि जवान होते - होते वह ठीक हो जायेगा और अपनी बुरी आदतों को छोड़ देगा। पर ऐसा नहीं हुआ। उसकी आदतें और ख़राब होती गयीं। वह अपने पिता की कमाई पानी की तरह बहाने लगा।

धीर के माता - पिता ऐसे बहुत् - से युवकों को जानते थे, जो विवाह के पश्चात् ठीक हो गये, अपनी बुरी आदतें छोड़ दीं, और अपने माता - पिता के कहे अनुसार चलते रहे। उनकी भी यही आशा थी कि विवाह करने पर अवश्य ही उनका बेटा सुधरेगा और सही मार्ग पर चलेगा। किन्तु कोई भी संपन्न व्यक्ति, जो धीर के गुणों को जानता हो, अपनी पुत्री का विवाह उससे नहीं करेगा। कोई दरिद्र दे भी दे तो उस कन्या में शांति, सहनशक्ति तथा पति-भक्ति आदि सद्गुण अवश्य होने चाहिये। अथवा वह ऐसे लंपट से जीवन - यात्रा कैसे कर पायेगी?

हेमगिरि के पड़ोस में रामवर नामक एक गाँव था। धवल उसी गाँव का एक ग़रीब किसान था। उसकी इकलौती बेटी थी शांता। जैसा नाम था, वैसे ही वह शांत स्वभाव की थी। बाल्यकाल से ही उसने पुराण तथा अन्य धर्म-ग्रंथ पढे, इसलिए वह सद्गुणवती भी थी।

एक बार शांता की माँ सख़्त बीमार पड़ी। माँ की यह हालत देखते हुए शांता चुप नहीं रह सकी। रामवर के ग्रामाधिकारी की पत्नी दो

साल पहले बहुत ही बीमार पड़ी। शांता तीन हफ़्ते उन्हीं के घर में रही और उसकी सेवा - शुश्रूषा करती रही। उसकी सेवा से वह चंगी भी हो गयी। तब उस ग्रामाधिकारी की पत्नी ने उसे वचन दिया था "भविष्य में जब तुम जो चाहोगी, दूँगी, तुम्हारा ऋण चुकाऊँगी। तुम्हें कोई ज़रूरत आ पड़े तो नित्संकोच मेरे पास आना और मुझसे पूछना। तुम्हारी इच्छा हर हालत में पूरी करूँगी"।

उस वचन की याद आते ही वह ग्रामाधिकारी की पत्नी से मिलने उसके घर गयी। उस समय धीर का पिता वहाँ उपस्थित था। शांता को देखकर उसके बारे में उसने सारे विवरण जान लिये। सब तरह से वह उसे अच्छी लगी। उसने मन ही मन निश्चय किया कि इसे अपनी बहू बनाऊँगा। उसने उसे सहायता का आश्वासन दिया और शांता की माँ की चिकित्सा करवायी।

फिर गाँव में धवल का जो कर्ज़ था, उसने चुका दिया। उसने धवल से कहा "इस गाँव में पाँच एकड़ की मेरी उपजाऊ ज़मीन है। वह ज़मीन तुम ले लो और अपनी बेटी की शादी मेरे बेटे से कराने की स्वीकृति दो।"

धवल को इस बात पर आश्चर्य हुआ और संदेह भी कि ऐसा संपन्न व्यक्ति मेरे साथ रिश्ता क्यों जोड़ना चाहता है? उसने धीर के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाही। जब उसने धीर के पिता से ही उसके बारे में पूछा तो उसने बिना कुछ छिपाये स्पष्ट बताया और कहा "तुम्हारी

बेटी के कारण तुम्हारी ग़रीबी दूर हो जायेगी और मेरा बेटा भी सुधर जायेगा।

जब धवल "हाँ" कहने के लिए हिचकिचा रहा था तो शांता ने इस विवाह के लिएअपनी सम्मति दी। उसे लगा कि इस विवाह से उसके माँ - बाप सुखी रह पायेंगे।

शांता और धीर का शीघ्र ही विवाह संपन्न हुआ। धीर शादी से ड़रता था। उसे ड़र था कि बात -बात पर उसकी पत्नी उसके वैयक्तिक जीवन में दख़ल देगी और मज़ा किरकिरा कर देगी, उसे जीवनका आनंद लूटने नहीं देगी। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ, क्योंकि शांता ऐसे स्वभाव की नहीं थी। वह कभी भी उससे पूछती ही नहीं थी कि वह कहाँ जा रहा है और क्या कर रहा

सबकी भलाई है''। किन्तु शांता ने ना के भाव में अपना सर हिलाते हुए कहा ''आप बड़े हैं। आपकी बातें सुनना मेरा धर्म है। परंतु मेरा पति मेरे लिए भगवान हैं। उनकी सेवा करती हुई अपने पातिव्रत्य - धर्म का पालन कर रही हूँ। मेरे लिए वे ही सब कुछ हैं''।

शांता को समझाने में सास - ससुर असफल रहे। कुछ दिनों बाद धीर अस्वस्थ हो गया। वह खाट पर ही पड़ा रहता था। वैद्य ने उसकी परीक्षा की और कहा ''बुरी आदतों की वजह से यह सख्त बीमार पड़ गया है। कोई भी दवा इसपर असर नहीं कर पायेगी। बस, इसी हालत में यह ऐसा ही पड़ा रहेगा''।

अपने पति की इस हालत पर शांता निराश नहीं हुई। उसमें पति के प्रति रत्ती भर भी घृणा पैदा नहीं हुई। वह जी - जान से उसकी सेवा में लगी रही। उसके माँ - बाप तो साधु - सन्यासी और बैरागियों के इर्द - गिर्द घूमते रहे और अपने बेटे को बचाने की प्रार्थनाएँ करते रहे।

एक दिन एक बैरागी ने उनसे कहा ''आपकी बहू अगर पतिव्रता हो तो आपका बेटा बच सकता है। उसका स्वास्थ्य सुधर सकता है और वह फिर से चलने - फिरने के योग्य बन सकता है। हेमगिरि के पास ही के जंगल में रामकृपा नामक एक सरोवर है। उस सरोवर के तट पर आम का एक पेड़ है। उस पेड़ की जड़ से कोई भी बीमारी दूर की जा सकती है''।

''इसमें संदेह नहीं कि हमारी वधु

है? उसकी दृष्टि में वह उसका भागवान था, आराध्यदेव था।

धीर के माता - पिता को शांता का यह रवैय्या अच्छा नहीं लगा। उन्हें लगा कि शांता अपने पति को अपने वश में रखने के बदले उसे और भी बिगड़ने में प्रोत्साहन दे रही है। उन्हें आशा थी कि शांता उसे सन्मार्ग पर ले आयेगी और उसे सुधारेगी। लेकिन शांता ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया। एक दिन उन्होंने अपनी पुत्रवधु को समझाते हुए कहा ''तुम्हारी चुप्पी से वह और भी बिगड़ा जा रहा है। अगर यही सिलसिला ज़ारी रहा तो हमारा सर्वनाश हो जायेगा। अब भी कोई विलंब नहीं हुआ। उसे सुधारने के प्रयत्न में जुट जाओ। इसी में हम

महापतिव्रता है। मैं स्वयं वह जड़ ले आऊँगा।'' पीता ने कहा। इसपर बैरागी हँस पड़ा और बोला ''पराये को वह जड़ छूनी नहीं चाहिये। तुम्हारी बहू को चाहिये कि वह अपने पति को एक टोकरी में बिठाये और उसे ढ़ोते हुए बिना किसी की सहायता के रामकृपा सरोवर के पास जाए। वहाँ के आम के पेड़ के नीचे एक तपस्वी तपस्या करता हुआ मिलेगा। उसी की महिमा के कारण उस पेड़ की जड़ महिमावान बन पायी है। तुम्हारी बहू को कुल्हाडी से उस पेड़ को काटना होगा और उसकी जड़ अपने पति को देनी होगी। उसको चबाने से तुम्हारा बेटा पुनः अपना स्वास्थ्य पायेगा।''

बैरागी की कही बात शांता के कानों तक पहुँची। उसने तक्षण अपने पति को एक टोकरी में बिठाया और उसे सिर पर रखकर ढ़ोती हुई बड़ी मुश्किल से जंगल में प्रवेश किया। वह बहुत दूर तक जा नहीं पायी। बोझ ना ढ़ो पाने के कारण वह एक तरफ़ गिर पड़ी और टोकरी दूसरी तरफ़। गिरते - गिरते उसने प्रार्थना की ''हे भगवान, अगर मैं पतिव्रता हूँ तो मेरे पति पर कोई आँच नहीं आयेगी। वे हर आपदा से सुरक्षित रहेंगे।''

थोड़ी देर बाद जब उसकी आँखें खुलीं तो उसे पति की आवाज़ सुनायी पड़ी। अब उसे विश्वास हो गया कि उसके पति सुरक्षित हैं, तो वह निश्चिंत हो गयी और उठ खड़ी हो गयी। धीर ने उससे कहा ''मेरा गला सूख गया है। गन्ने का रस पीने की इच्छा हो रही है''। उसके स्वर में बड़ी नीरसता थी।

शांता ने इर्द-गिर्द देखा तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ। वह जगह ऐसी नहीं थी, जहाँ अचेत हो वह गिर पड़ी थी। बग़ल में ही एक सरोवर था। सरोवर के पास ही आम का पेड़ था। उसने सोचा, शायद यही रामकृपा सरोवर होगा, भगवान की कृपा से यहाँ पहुँच गयी हूँ।

उसने टोकरी में रखी कुल्हाड़ी ली और आम के पेड़ की तरफ़ देखा। उसने आम के पेड़ में सोने के रंग में रंगे लटकते हुए आम के फल देखे। यह आम के फलों का मौसम नहीं है, फिर भी पेड़ में लटकते हुए फलों को देखकर वह प्रसन्न हुई। उसे लगा कि यह सब कुछ भगवान की
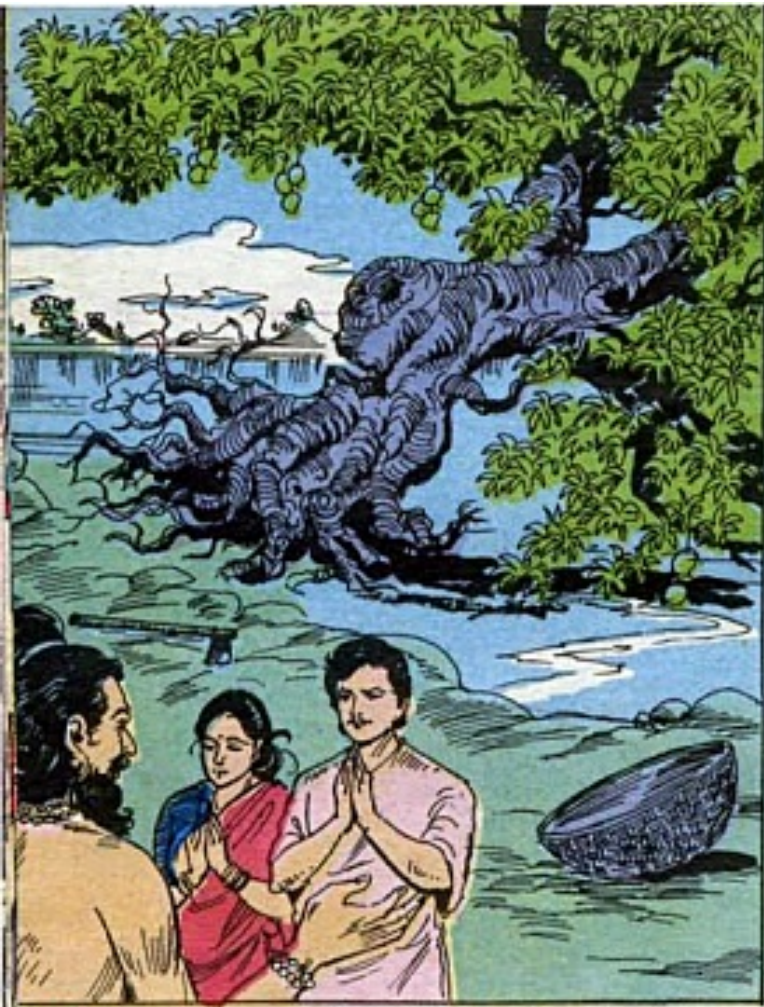
लीला है। उसने आम का फल तोड़ा। वह फल तक्षण ही सोने की कटोरी के रूप में परिवर्तित हुआ। उस कटोरी में सुगंधित रस था। वह जान गयी कि यह रस गन्ने का रस है।

उसने वह रस अपने पति को पिलाया और कुल्हाड़ी लेकर पेड़ के पास पहुँची कि नहीं, उसे एक स्वर सुनायी पड़ा ''ठहरो''। उस स्वर में कटुता थी। उसने देखा कि एक तपस्वी पेड़ के पास खड़ा हुआ है। लाल धोती पहना हुआ है। माथे पर विभूति है। बाल बिखरे हुए हैं। तपस्वी ने शांता से कहा ''फलों से भरे एक वृक्ष को काटने के प्रयत्न में हो, जो नितांत त्रुटिपूर्ण है। कौन हो तुम? ऐसा काम क्यों कर रही हो?''

शांता ने उसे अपने बारे में पूरा विवरण दिया।

''उस पेड़ के नीचे तपस्या करनेवाला तपस्वी मैं ही हूँ। मेरी तपस्या के प्रभाव ही के कारण उन जड़ों में ऐसी अद्भुत महिमा आ पायी है। मेरा विरोध करके, मेरा तिरस्कार करके तुम उस पेड़ को काट नहीं पाओगी'' तपस्वी ने गंभीर स्वर में कहा, मानों वह उसे चेतावनी दे रहा हो।

दूसरे ही क्षण शांता के हाथ से कुल्हाड़ी उड़ी और हवा में घूमने लगी। तपस्वी ठठाकर हँसता रहा। शांता मुनि के पास आयी और उसके पाँवों पर झुक कर प्रणाम करती हुई बोली ''आप अगर तपस्वी हैं, आप में अगर शक्ति है तो मेरे पति पर दया कीजिये। उसे पुनः स्वस्थ कीजिये, अथवा मेरे रास्ते से हट जाइये''।

तपस्वी ने तदेक दृष्टि से उसे देखा और कहा 'तुम्हारा पति पापी है। अपने पापों का फल भोग रहा है। उसे मैं क्या, भगवान भी बचा नहीं सकते''। शांता ने दृढ़ स्वर में कहा ''अगर मैं पतिव्रता हूँ, तो भगवान मेरे इस कार्य में सहयोग दें, सफल करें''। बस, यह कहते ही हवा में तैरती हुई वह कुल्हाड़ी अपने आप उस पेड़ को काटने लग गयी। मुनि ने उसे ऐसा करने से रोकने के लिए बहुत - से मंत्र पढ़े, किन्तु उसपर उन मंत्रों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

थोड़ी ही देर में आम का पेड़ भूमि पर गिर गया। पेड़ पूरा उखड़ गया और उसकी जड़ें बाहर आ गयी। उसमें से एक जड़ को शांता ने लिया, उसे सरोवर में धोया और उसे पति के मुंह में रखा। धीर स्वस्थ हो गया और टोकरी से

नीचे उतरा। पति - पत्नी ने तपस्वी को प्रणाम किया और वहाँ से संतृप्त निकल पड़े।

एक साधारण स्त्री के सम्मुख परास्त हो जाने के कारण दुख के भार से तपस्वी भूमि पर गिर पड़ा।

बेताल ने राजा को यह कहानी सुनायी और कहा ''धीर ने अपने माँ - बाप की बातें नहीं सुनीं, उनकी परवाह नहीं की। वह अनेकों दुर्व्यसनों का शिकार हो गया। स्वास्थ्य खो दिया और चंद दिनों का मेहमान बन गया। मृत्यु किसी भी क्षण उसे निगल सकती थी। ऐसे विलासी, स्वार्थी तथा लंपट को बचाने के लिए, अपने स्वार्थ के लिए शांता पेड़ को काटने उद्यत हो गयी। तपस्वी तो निस्वार्थी था, केवल मोक्ष-प्राप्ति के लिए वह पेड़ के नीचे बैठकर तपस्या करता था। ऐसे महान तपोधनी की तपस्या शांता जैसी साधारण स्त्री के सम्मुख क्यों विफल रह गयी? इसे विधि की विडंबना कहकर मौन रह जाएँ या इसमें कोई ऐसा अंतर्निहित भाव है, जो मानव के मस्तिष्क की पहुँच के बाहर है। जानते हुए भी मेरे इन संदेहों का समाधान नहीं दोगे तो इसी क्षण तुम्हारा सर फट जायेगा''।

विक्रमार्क ने उत्तर दिया ''पुराणों का कथन है कि पतिव्रता का सामना करने की शक्ति भगवान में भी नहीं है। हो सकता है, अपने पति का सुख चाहने में शांता का स्वार्थ हो। वह अपनी शक्तियाँ अपने लिए नहीं, बल्कि अपने पति के लिए उपयोग में ले आयी है। इसी कारण वह महिमा-पूरित बन पायी है। जो भगवान दिखते नहीं, उनकी पूजा करने के बदले, अच्छा तो यही है कि कष्टों में फँसे मनुष्य को उबारें। और जो ऐसा करते हैं, वे अवश्य ही उत्तम मनुष्य हैं। अब रही तपस्वी की बात। भगवान ने उसे श्रेष्ठ मानव - जन्म प्रसादा है। किन्तु अपनी मोक्ष - प्राप्ति के लिए तपस्या में मग्न वह स्वार्थी है। उससे दुसरों को किसी भी प्रकार का लाभ पहुँचनेवाला नहीं है। कम से कम उसने यह सोचा तक नहीं कि जिस वृक्ष ने उसे आश्रय दिया, उसे अपने तपोबल से जीवित करूँ। अत:जो हुआ है, उसे विधि की विडंबना समझना भूल है।''

राजा के मौन -भंग से बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

-आधार

श्रीमती रामलक्ष्मी की रचना

पुण्यवान

हेलापुरी की विशाल गली में एक आदमी, अपने सिर पर टोकरी ढोये जा रहा था। ठोकर खाकर वह नीचे गिर गया। टोकरी नीचे गिरी और उसमें रखी कांच की सारी सामग्री फूट गयी। लोगों की भीड़ जम गयी और उसके प्रति सहानुभूति दिखाने लगी।

तब एक व्यक्ति आगे आया और बोला "कांच का सारा सामान फूट गया। मालिक तो इसकी रक़म तुम्हारे वेतन से अवश्य ही काटेंगे और सामान का पैसा तुमसे वसूल करेंगे। हम सब एक - एक अशर्फ़ी देंगे। फिर से सामान खरीदना और अपने मालिक को देना।" कहते हुए उसने उस टोकरीवाले को एक अशर्फ़ी दी।

यह देखकर वहाँ जमी भीड़ में से कुछ लोगों ने एक - एक अशर्फ़ी उसे दी। उस रक़म से कांच की नयी सामग्री खरीदने के लिए जब वह दुकान की तरफ़ बढ़ रहा था, तब भीड़ में से एक आदमी ने उससे पूछा "अब तुम्हारा मालिक तुम्हें गालियाँ नहीं देगा, तुम्हारे वेतन में से कटौती नहीं करेगा। आख़िर तुम्हारे मालिक हैं कौन?"

नौकर ने कहा "वही पुण्यवान हैं, जिन्होंने पहले - पहले मुझे अशर्फ़ी दी थी। वे ही मेरे मालिक हैं।"

यह जानकर कि मालिक कौन है, लोग भौंचक्के रह गये।

- अमृतलाल नानावटी

चन्दामामा परिशिष्ट - ७२

हमारे देश के वृक्ष

अशोक वृक्ष

रावण ने सीता का अपहरण किया और लंकानगर के एक उद्यानवन के अशोकवृक्ष के तले उसे बंदी बनाकर रखा। हनुमान ने भी सीता को वहीं पाया। इसी कारण हिन्दू इस वृक्ष को पवित्र वृक्ष मानते हैं।

बताया जाता है कि गौतम बुद्ध का जन्म उनकी माता मायादेवी के गर्भ से, लुंबिनी वन के इसी अशोक वृक्ष के तले हुआ था। सम्राट अशोक ने इसका पौधा श्रीलंका के अनुराधापुर में भेजा। वहाँ यह पौधा रोपा गया और वृक्ष बना, जो आज भी सजीव है। अतः बौद्ध भी अशोक वृक्ष को पवित्र मानते हैं।

गीले प्रदेशों में यह वृक्ष अधिकतर पनपता है। ये वृक्ष देखने में मनोहर लगते हैं। क़रीबन १० मीटर की ऊँचाई तक यह बढ़ता है। इसकी शाखाएँ छोटी-छोटी होती हैं और पत्ते घने। सदा हरे दीखनेवाले मोटे पत्तों के बोझ की वजह से इसकी शाखाएँ नीचे झुकी हुई होती हैं। बीच का हिस्सा सीधा होता है। गुच्छों में विकसित होनेवाले इसके फूल पहले पीले रंग के होते हैं। फिर ये नारंगी रूप धारण करते हैं और आख़िर लाल रंग में परिवर्तित होते हैं।

अशोक पुष्पों का उपयोग पूजाओं में होता है। इसके पत्ते और फूल औषधों को बनाने के काम में भी लाये जाते हैं।

सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानक का यह प्रबोधन है।

"जिसे तुम्हारा आशीर्वाद प्राप्त है, उसे मैं भी आशीर्वाद दूँगा। जो तुम्हारी करुणा के पात्र बनते हैं, वे मेरी भी करुणा के पात्र होंगे। मैं ही परमदैव हूँ, सृष्टिकर्ता हूँ, तुम गुरु हो" यों भगवान ने नानक को आशीर्वाद दिया।

गुरुनानक के प्रबोधनों का प्रचार गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास नामक उनके शिष्यों ने किया। उनके बाद के शिष्य अर्जुन ने (१५६३-१६०६) गुरुओं की सूक्तियों का संकलन किया। उनके साथ-साथ अपनी रचनाएँ भी मिश्रित कीं। वही सिक्खों का सर्वप्रथम धार्मिक ग्रंथ

आदि ग्रन्थ

भगवान एक है।

वही परम सत्य है।

वह सृष्टिकर्ता है।

भय-द्वेष रहित है।

सर्वांतरयामी है।

विश्व व्यापक है।

उसका करुणा-पात्र बनकर उसकी पूजा करो।

काल से पूर्व सत्य का अस्तित्व है।

काल-यात्रा जब से शुरू हुई, तब से वही सत्य है।

अब भी वही सत्य है।

सदा सत्य ही नित्य है।
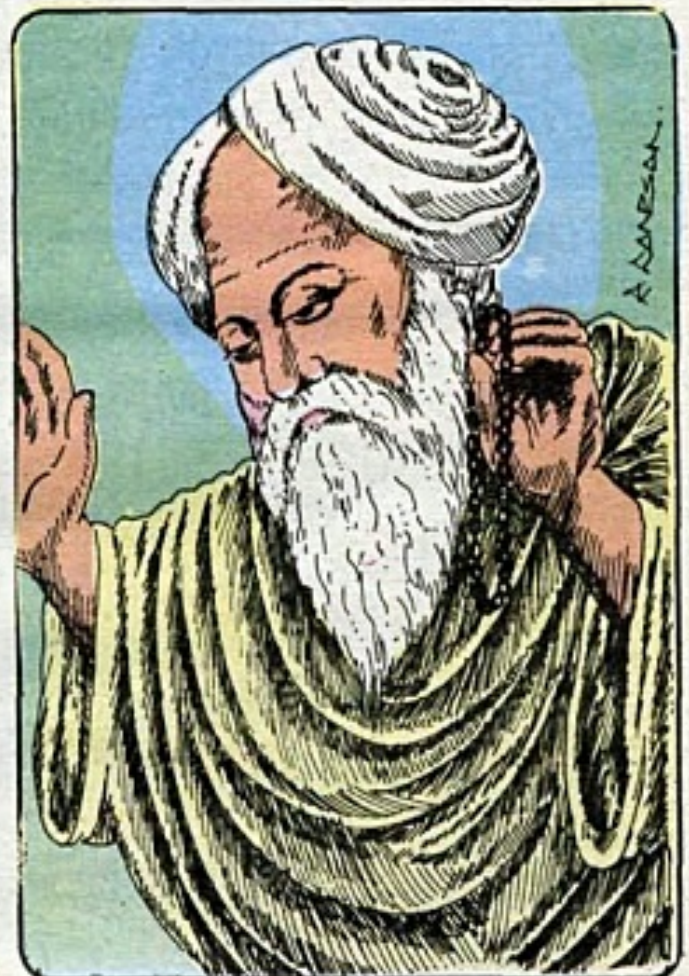
'आदि ग्रंथ' माना गया है। यह ग्रंथ १६०४ में अमृतसर के मंदिर में रखा गया। 'ग्रंथ साहब' के नाम से पुकारे जानेवाले इस ग्रंथ में केवल सिक्खों के गुरुओं के बोधन ही नहीं हैं बल्कि हिन्दु तथा जैनों से संबंधित कितनी ही आध्यात्मिक सूक्तियाँ भी इसमें उपलब्ध हैं। इसमें निहित कीर्तन भक्ति-प्रधान हैं। यद्यपि इसमें बहुत-से गंभीर तात्विक सिद्धांतों की चर्चा भी है, किन्तु ये सरल भाषा में लिपिबद्ध हैं, जिससे इन्हें समझना सुगम है।

हमारे देश के विविध धर्मों से प्रेरित होने के कारण, इस धर्म में विविध धर्मों के अंश सम्मिलित हैं। सिक्ख धर्म की स्थापना पंद्रहवीं शताब्दी में हमारे देश में हुई। सिक्ख धर्म के ही नहीं बल्कि बहुत से हिन्दु भी 'ग्रंथ साहब' को पवित्र ग्रंथ मानते हैं और बड़ी श्रद्धा और भक्ति से उसका पठन करते हैं।

(आधार - कुष्वंत सिंग की ''सिक्खों का इतिहास'')

'शिष्य नामक शब्द से सिक्ख शब्द की उत्पत्ति हुई है। सिक्ख धर्म को दस गुरु और उनके शिष्यों से संबंधित धर्म कहा जा सकता है। सिक्ख का मतमब है, वह शिष्य, जो अपने गुरु के लिए अपने प्राण को भी न्योछावर करने सन्नद्ध हो। ये गुरु दस हैं:-

गुरु नानक (१४६९-१५३९), गुरु अंगद (१५०४-१५५२), गुरु अमरदास (१४७९-१५७४), गुरु रामदास (१५३४-१५८१), गुरु अर्जुन देव (१५६३-१६०६), गुरु हरगोविंद (१५९५-१६४४), गुरु हरिराम (१६३०-१६६१), गुरु हरिक्रिषन (१६५६-१६६४), गुरु तेग़ बहादूर (१६२१-१६७४), गुरु गोविंद सिंग (१६६६-१७०२).

गुरु नामक शब्द इन दसों तक ही सीमित है।
सृष्टि के बारे में गुरु नानक ने यों कहा।
''स्तंभों के आधार के बिना उसने स्वर्ग की सृष्टि की।
अपनी वाणी से उसने सूर्य-चंद्र की सृष्टि की तथा उनमें अपनी कांति को भर दिया।
तुम्हारे कोई माँ-बाप नहीं हैं। तुम्हें जन्म देने की शक्ति किसी में नहीं।
तुम्हारा कोई रूप नहीं। कोई जाति-भेद नहीं।
नानक ने कहा कि भगवान ने पँचभूतों से संसार की सृष्टि की है।
अनंत विश्व ही भगवान की अद्‌भुत सृष्टि है। वही उसकी अपार शक्ति का प्रमाण है।''

क्या तुम जानते हो?

१. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना दो भाइयों ने की। उनके क्या नाम हैं ?

२. जो नगर उसका निवासस्थल था, वह उसी के नाम पर बुलाया जाए, यह इच्छा थी एक सुप्रसिद्ध रचयिता की। उस रचयिता का क्या नाम है ?

३. हमारे देश में हिन्दी के बाद अत्यधिक संख्या में बोली जानेवाली चार भाषाएँ कौन-सी हैं ?

४. अधिकाधिक दूरी तक तैरनेवाला तैराक कौन था ? कब और कहाँ ?

५. प्राचीन संस्कृत व्याकरण के कर्ता कौन थे? उससे रचित ग्रंथ का क्या नाम है ?

६. साइकिल का आविष्कार किसने किया और कब ?

७. कौन-सा नगर दक्कन-रानी के नाम से पुकारा जाता है ?

८. आधुनिक सिंगापूर के स्थापक कौन हैं और किसने उसकी स्थापना की ?

९. 'बांबे डक' की विचित्रता क्या है ?

१०. जापान के पार्लमेंट का क्या नाम है ?

११. सेले बीसवीं शताब्दी का प्रख्यात फुटबाल खिलाड़ी है। उससे स्थापित रिकार्ड क्या है ?

१२. भूमि की विशालता कितनी है ?

१३. बहुत ही वज़नदार स्त्री कौन है ? और उसका वज़न क्या है ?

१४. संसार के किस देश में अधिकतर अग्नि-पर्वत हैं ?

१५. हाल ही में भारत के कुछ तैराकों ने इंग्लीश चानल तैरा एक तैराक ने चारों चानलों को पाँच सप्ताहों में तैरा। वह कौन है ?

१६. उदित सूर्य की भूमि के नाम से प्रसिद्ध देश कौन-सा है ?

१७. पानी के अंतराल में अधिक वेग से दौड़ सकतेवाला जंतु कौन-सा है ?

उत्तर

१. हरिहरराय और बुक्कराय

२. फ्रेंच रचयिता विक्टर ह्यूगो

३. तेलुगु, तमिल, मराठी, बंगाली

४. अमेरीका का जेन्सन हग्गार्ड, १९७५ में

५. पाणिनी (ई.पू.चौथी शताब्दी में, अष्टाध्यायी)

६. किर्क पाट्रिक माक्मिलन, १८३९ में।

७. पुणें

८. सर स्टाफर्ड राफिल्स, १८१९ में

९. वह व्यक्ति विशेष नहीं, एक मछली का नाम

१०. दि डियेट

११. यह खिलाड़ी ब्राज़ेल देशवासी है। १९५६-१९७४ के बीच १,२५४ क्रीड़ाओं में १,२१६ गोल्स किये।

१२. ५१०, १००, ५०० कि.मी.

२३. अमेरीका का पेर्सी पेर्ण, २९९ कि.ग्राम

२४. इंडोनेशिया

२५. अमेरीका का फ्लारेन्स चाडविक।

२६. जापान

२७. जलहाथी

दोषारोपण

दयानिधि श्रेष्ठ पंडितों में से था। ज़मींदार उसके पांडित्य से बहुत प्रसन्न हुआ और उसे दस एकड़ की ज़मीन भेंट में दी। उसी ग्राम के वासी भूषण से उसमें खेती करवा रहा था। पंडित होने के नाते भूषण उसका बहुत आदर करता था और बड़ी श्रद्धा से खेत की देखभाल कर रहा था। दयानिधि के घर का काम - काज भी नित्य आकर कर लेता था।

परंतु दयानिधि उसके काम से तृप्त नहीं था। वह कहा करता था "तुम काम बहुत धीरे - धीरे करते रहते हो। दिमाग़ से काम नहीं लेते, इसलिए दुगुनी मेहनत करते हो। अपने अनुभव से काम लो और अपने कामों को सूचारु रूप से करो। साफ़ रहो" यों बात-बात पर उसे डाँटता रहता था।

भूषण दयानिधि का बहुत आदर करता था। उसके कहे अनुसार अपने को बदलने की उसने बहुत कोशिशें कीं। वह सदा उसे कोसता रहता या कि धीमे - धीमे काम करते हो, तो उसने तेज़ी से काम करना शुरु कर दिया तो दयानिधि ने कहा "बड़ों ने कहा है कि ज़ल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए, फूँक - फूँककर चलना चाहिये। और तुम हो जो दौड़ रहे हो। क्यों उस नाचनेवाले घोड़े को सजाने के लिए इतनी जल्दबाजी कर रहे हो?" यों उसने भूषण से चिल्ला-चिल्लाकर कहा।

दयानिधि ने उसे एक बार बाल्टी लेकर पानी खींचने को कहा। बाल्टी लेकर कुएँ से पानी खींचना हो और देग भरना हो तो बहुत समय लगेगा और हाथ भी दुखेंगे। समय भी व्यर्थ होगा। इसलिए देग में उसने रस्सी बाँधी और घिरनी से उसे कुएँ में डाला।

देग़ को कुछ ही क्षणों में पानी से भर दिया।

दयानिधि ने जब यह देखा तो घबड़ा गया। उसने पास आकर शोर मचा दिया कि तुमने ऐसा क्या कर दिया ?

"आपने काम सौंपा। मैने दिमाग से काम

लिया। क्षणों में काम पूरा हो गया''। भूषण ने निश्चिंत हो बताया।

''दिमाग़ से वे लोग काम लेते हैं, जिनमें है। मैंने बाल्टी का इश्तेमाल करने को कहा। मैंने यूँ ही थोड़े ही कह दिया। मेरे कहने का मतलब है। तुमने जो काम किया, उससे वज़न ज्यादा होने की वजह से रस्सी के टूट जाने की संभावना है। घिरनी टेढ़ी हो सकती है, इसीलिए मैंने तुम्हें बाल्टी से काम चलाने को कहा। आगे से कभी भी मुझसे कहे बिना ऐसे काम मत करना'' दयानिधि ने कटुता से भरे स्वर में कहा।

''पंडितजी, मैंने आपसे ग़लत कहा था। सचमुच मैंने अपने दिमाग़ का उपयोग नहीं किया। कितने ही सालों से मैं यही उपाय अमल में ला रहा हूँ। मैंने उस अनुभव का फ़ायदा उठाया है और अपनी मेहनत कम कर ली है''। यों भूषण ने दयानिधि को समझाने का प्रयत्न किया।

किन्तु दयानिधि नाराज़ होता हुआ बोला ''जहाँ ज्ञान व पांडित्य नहीं होते, वहाँ अनुभव काम नहीं आयेगा। किसी पर्वत पर अगर किसी क्रूर जंतु ने तुमपर हमला किया तो तक्षण ही तुम वहाँ से कूद पड़ोगे और अपनी रक्षा करोगे। इसी अनुभव के आधार पर कभी पहाड़ से कूदोगे तो तुम्हारा मरना निश्चित है। तुम्हें ना ही शरीर-शास्त्र मालूम है, ना ही भौतिक शास्त्र। इसीलिए अब तक तुम ऐसे काम करते जा रहे हो। भाग्य कहो अथवा मुझ जैसे पंडित का आशीर्वाद कहो, अब तक जीवित हो। आगे से ऐसे कामों से दूर रहो''। भूषण की समझ में नहीं आया कि पंडित दयानिधि उसके हर काम में क्यों
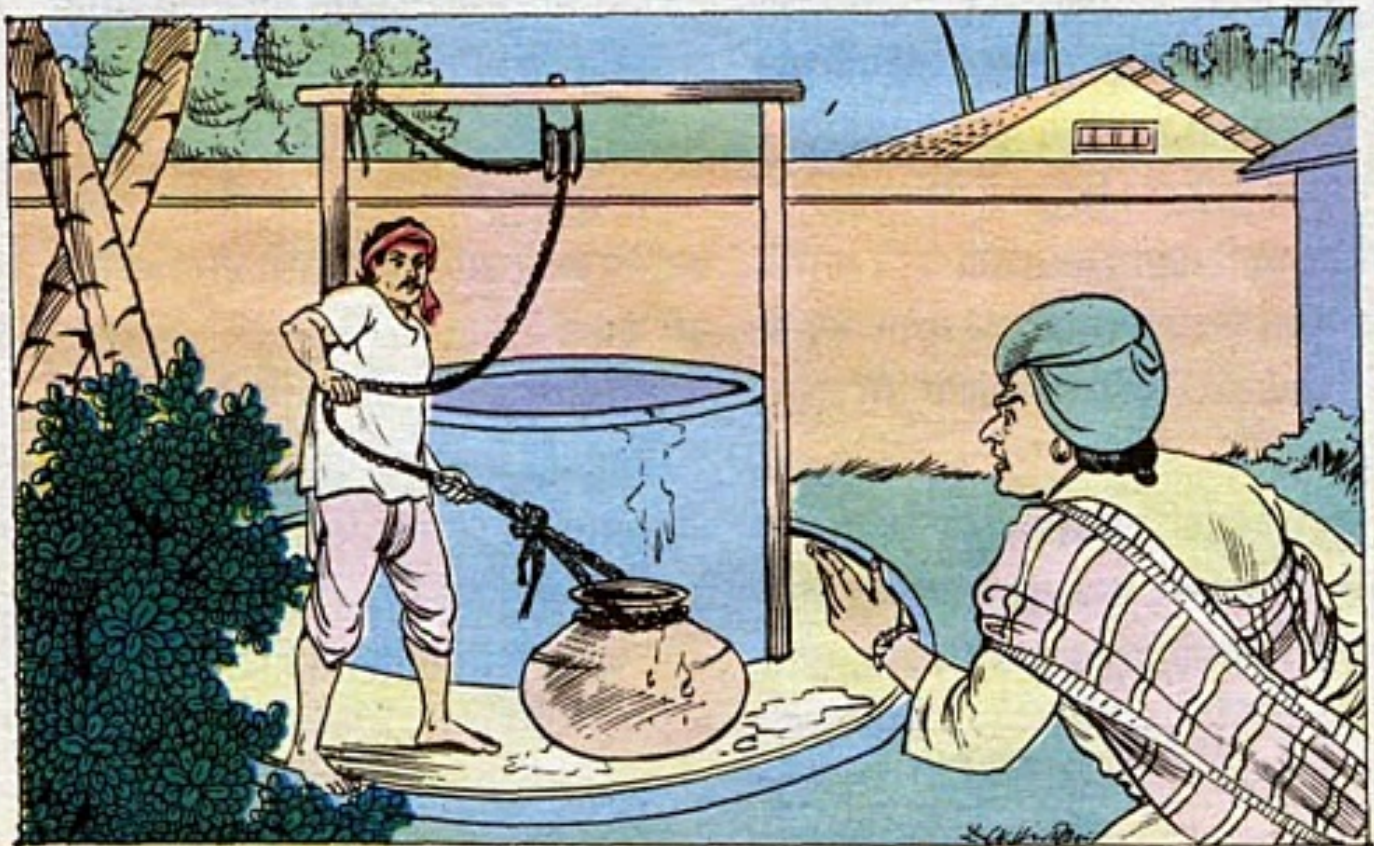
कोई ना कोई खोट निकालते रहते हैं। वे जो कहते हैं, उसी उपाय को अमल में लाकर काम चलाने का प्रयत्न वह करता रहता है, फिर भी वे उसकी प्रशंसा नहीं करते बल्कि उसे कोसते रहते हैं। बेचारे को यह मालूम नहीं था कि यह पंडित का स्वभाव भी है और चालाकी भी। जो भी हो, उनकी आज्ञा का पालन करना उसका कर्तव्य है। आख़िर वे पंडित जो हैं। दयानिधि उसे बारंबार यह कहकर गाली देता रहता था कि तुम साफ़ नहीं रहते। सफ़ाई का ध्यान रखो। भूषण ने एक दिन नहाया, साफ़-सुथरे कपड़े पहने, इत्र लगाया और दयानिधि के घर गया।

उसे देखते ही दयानिधि ने पूछा "काम करने आये हो या मेरे साथ बैठकर खाने?"

भूषण ने विनयपूर्वक कहा "जब देखो, आप कहते रहते हैं कि साफ़ रहो। इसीलिए नहा-धोकर साफ़ कपड़े पहनकर आया हूँ"।

"तुम झूठ बोल रहे हो। यों बन -ठनकर इसलिए आये हो कि मैं कोई काम तुम्हें सौंप ना सकूँ। इत्र की बू जिससे आ रही हो, उससे पसीना बहानेवाला काम कैसे करवाया जाए? अगर तुम्हें पसंद नहीं हो तो मैं थोड़े ही तुमपर जबरदस्ती करूँगा? जो बात है, साफ़ - साफ़ कह सकते हो। घुमा - फिराकर ये सब नाटक क्यों कर रहे हो? अब तुम जाओ। मैं अपने काम स्वयं कर लूँगा।" दयानिधि ने बड़ी कठोरता से कहा।

भूषण को उसकी बातों से दुख हुआ। वह घर गया और कपड़े बदलकर वापस आया। फिर पंडित ने जो काम सौंपे, कर दिया।

दयानिधि कुछ भी कहे, भूषण नाराज़ नहीं

होता। उसकी देखरेख में औरों की खेतों में भी काम चल रहा है। सब उसके कामों में कोई ना कोई खोट निकाल रहे हैं। अगर किसी ने बेबुनियादीप्पणियाँ कीं, तो वह उनका मुंह तोड़ जवाब देता रहता था। किन्तु दयानिधि से कभी भी ऐसा पेश नहीं आता था।

भूषण चाहता था कि अपने बेटे को दयानिधि का शिष्य बनाऊं। लेकिन बेटा चंद्रशेखर अपनी पढ़ाई के लिए पड़ोस के गाँव के पंडितों के यहाँ जाता था। दयानिधि के यहाँ आता ही नहीं था। अगर कभी आता भी तो यह जानने आता था कि उसकी पढ़ाई सही दिशा में चल रही है अथवा नहीं।

''तुम बहुत ही अक़्लमंद हो। तुम मेरे शिष्य बनोगे तो तुम्हें मैं महापंडित बनाऊँगा।'' दयानिधि ने एक बार चंद्रशेखर से कहा।

चंद्रशेखर ने उत्तर दिया ''महोदय, आप महापंडित हैं। सूर्य के ताप से हनुमान जैसा बलशाली भी मूर्छित हो गया। मैं तो आपके सम्मुख टिक नहीं पाऊँगा। इसीलिए मैं दूसरों के यहाँ विद्याभ्यास कर रहा हूँ। जब मैं योग्य बनूँगा, मेरा स्तर बढ़ेगा, तब आपके यहां, आपका शिष्य बनकर रहूँगा''।

चन्द्रशेखर जब-जब दयानिधि से मिलता तब-तब उसकी प्रशंसा के पुल बाँधता रहता था, इसलिए दयानिधि उसे चाहने लगा। भूषण अक़्सर उससे अपने बेटे की पढ़ाई के बारे में उससे पूछता रहता था।

''तुम्हारा बेटा अच्छी तरह पढ़ रहा है। किन्तु वह बड़ों का आदर करना नहीं जानता। मुझसे जब कभी भी मिलने को आता है, उसे इतना भी ज्ञान नहीं कि मुझे विनयपूर्वक प्रणाम करे''। दयानिधि ने चंद्रशेखर की शिकायत की।

भूषण ने कहा ''आप बड़े हैं। अगर वह बड़ों का आदर करना नहीं जानता तो उसे आप सिखाइये और सही मार्ग-दर्शन कीजिये।''

''पंडित किसी से नहीं कहते कि मुझे नमस्कार करो। मैने तुम्हारे बेटे को कई बार समझाया भी था कि जब बड़ों से मिलते हो, तब उन्हें प्रणाम करो, उनका कुशल-मंगल पूछो। वह तो हमेशा कहता रहता है कि आपने बिल्कुल ठीक कहा, लेकिन मुझे प्रणाम नहीं करता,

मेरा कुशल-मंगल नहीं पूछता। भला मैं कैसे पूछ पाऊँगा कि मुझे प्रणाम करो'' दुखी होते हुए दयानिधि ने कहा।

उस रात को भूषण ने अपने बेटे से पूछा ''सुनता हूँ कि तुम दयानिधि पंडित को नमस्कार नहीं करते।''

चंद्रशेखर हँसा और मौन रह गया।

''तुम ग़लती कर रहे हो। आगे कभी भी ऐसा मत करना। अपनी ग़लती सुधारो।'' भूषण ने चंद्रशेखर को शांत स्वर में समझाया।

चंद्रशेखर ने कहा ''मैं पढ़ा-लिखा हूँ, इसलिए दयानिधि मुझसे कुछ नहीं कहते। मैं उनकी प्रशंसा करता रहता हूँ, इसलिए वे मुझे चाहते भी हैं। मैं उन्हें प्रणाम नहीं करता, मेरी इस ग़लती का ज़िक्र वे आपसे करते हैं, मुझसे नहीं''। यों कहकर वह चुप रह गया।

''इसका यह मतलब नहीं कि तुम उन्हें प्रणाम ना करो। यह ग़लत है और अपनी ग़लती को सुधारो।'' भूषण ने कहा।

''आपने ठीक ही कहा। मानता हूँ, यह मेरी ग़लती है। जब तक मैं ऐसी ग़लती करता रहूँगा तब तक वे मेरी दूसरी ग़लतियों पर टीका-टिप्पणियाँ नहीं करेंगे। दयानिधि दूसरों की ग़लतियों को प्रधानता देनेवाले व्यक्ति हैं। मेरी पढ़ाई में दोष ढूँढ़-ढूँढ़कर वे आपसे बतायेंगे और आप मुझे इसपर कोसेंगे तो पढ़ाई में मेरी कोई अभिरूचि नहीं होगी, मैं निरूत्साहित हो जाऊँगा। पढ़नेवाले को प्रोत्साहन चाहिये। छोटी-छोटी बात पर भी उँगली उठायी जाए, दोष निकाला जाए तो शिष्य ठंडा पड़ जाता है, पढ़ाई में उसकी अभिरुचि नहीं होती। उनका ध्यान मेरी अन्य त्रुटियों पर नहीं जाए, इसीलिए मैं एक ही ग़लती कर रहा हूँ। मेरा भला चाहते हों, अच्छी शिक्षा पाने के आप इच्छुक हों तो मुझसे ज़बरदस्ती प्रणाम मत कराइये।'' चंद्रशेखर ने शांतिपूर्वक पिता को समझाया।

वास्तविकता भूषण की समझ में अब आयी। अपने बेटे की अक़्लमंदी पर उसे बेहद खुशी हुई। वह समझ गया कि ग़लतियाँ ढूँढ़ निकालने वाला पढ़े-लिखे व्यक्ति के प्रणान का हक़दार नहीं है। भविष्य में उसने कभी भी किसी भी प्रकार की ज़बरदस्ती अपने बेटे पर नहीं की।

क्रोध से लाभ

राजकोट में परशुराम नामक एक संपन्न किसान था। पुराण पुरुष परशुराम की ही तरह वह भी क्रोधी स्वभाव का था। हर छोटी-सी छोटी बात पर वह आग बबूला हो जाता था।

एक बार उसका दोस्त मुकुंद उससे मिलने आया। मुकुंद घोड़ा-गाड़ी से उतरा और गाड़ीवाले को पाँच रुपये का किराया दिया। गाँड़ीवाले ने पाँच रुपये लिये और शहर की तरफ़ लौटने लगा।

मुकुंद का स्वागत करने आये हुए परशुराम ने यह देख लिया। वह उस गाड़ीवाले को रुपये लेते हुए देखकर एकदम नाराज़ हो उठा और बोला "क्यों, शहर से यहाँ तक आने का किराया पाँच रुपये हैं? हममे से किसी ने भी अब तक दो रुपयों से अधिक नहीं दिये। ये भलमानस हैं, इसलिए उनसे ज़्यादा किराया ऐंठ रहे हो? चुपचाप तीन रुपये उन्हें वापस दे दो"।

गाड़ीवाला घबराता हुआ बोला "साहब, दो-तीन और गाड़ीवालों से बात करने के बाद ही इन्होने यह किराया तय किया था। बाक़ी गाड़ीवालों ने इनसे ज़्यादा किराया माँगा था। मैंने तो इनसे उनसे कम किराया माँगा, इसीलिए वे मेरी गाड़ी में आये।"

"तो इसका मतलब हुआ कि तुम गाड़ीवालों ने मिलजुलकर ही किराया बढ़ा दिया है। आपस में बातें करके ही तुम लोगों ने यह काम किया है। जो भी हो, मेरे पास तुम लोगों की यह अंधाधुंधी नहीं चलेगी। खबरदार।" कहते हुए वह गाड़ीवाले पर पिल पड़ा और उससे पाँच रुपये छीन लिये। उसमें से दो रुपये लिये और बाक़ी उसपर फेंक दिया।

गाड़ीवाले ने बड़े विनय से कहा "महाशय, आप जैसे बड़ों को ऐसा काम नहीं करना चाहिये"।

उसकी बातों से परशुराम के क्रोध का पारा

और चढ़ गया। वह आपे से बाहर हो गया। उसने तीव्र स्वर में कहा "तुम्हारी इतनी हिम्मत कि मुझ जैसे आदमी से ही कहने लग गये कि क्या अच्छा है और क्या बुरा? अपने को क्या बड़ा समझने लगे ? फिर से अगर तुमने अपना मुँह खोला तो अपने शिकारी कुत्तों से तुम्हें और तुम्हारे घोड़े को गाँव के सरहदों तक भगाऊँगा। चले जाओ यहां से।"

गाड़ीवाला समझ गया कि ऐसी नाराज़ी में यह आदमी अपने शिकारी कुत्तों को मेरे पीछे भगायेगा भी, तो उसने अपने आपको संभाल लिया और चुप रह गया। वह कल्पना में खो गया कि शिकारी कुत्ते उसकीऔर उसके घोड़े का पीछा करेंगे तो क्या होगा? कल्पना मात्र से वह काँप उठा और घोड़े को वायुवेग से दौड़ाकर भाग गया।

मुकुंद यह सब कुछ दर्शक की तरह देख रहा था। गाड़ीवाले के चले जाते ही उसने कहा "परशुराम, लगता है, तुम्हारा क्रोध सीमाएँ पार कर रहा है। छोटी सी छोटी बात पर तुम आपे से बाहर हो रहे हो। एक छोटी-सी बात पर इतना गुस्सा, इतना शोर। बड़ों ने कहा है, अपना क्रोध अपना ही दुश्मन होता है। इस बात की सच्चाई जानो और अपना गुस्सा कम करने की कोशिश करो। गुस्से में आदमी अंधा हो जाता है। वह अच्छाई और बुराई का भेद भूल जाता है। मुँह में जो आता है, अनाप शनाप बोल देता है। दूसरों के दिलों को दुखाता है। इससे उसे ही दूसरों से ज़्यादा हानि पहुँचती है। संक्षेप में, तुम बुरा ना मानो तो यह भी कहने का साहस करूँगा कि वह उस स्थिति में पशु

बन जाता है।'' उसने ये बातें अपने दोस्त की भलाई के लिए ही कही थीं।

इसपर परशुराम हँस पड़ा और बोला ''मुकुँद, क्या मैं इतना भी नहीं जानता ? जिन बड़ों की बात तुम कह रहे हो, उन बड़ों ने यह भी कहा है कि ग़रीब का गुस्सा ग़रीब को ही नुक़सान पहुँचाता है। इसका मतलब यही हुआ ना कि नाराज़ी धनी का कुछ नहीं बिगाड़ती। बिगाड़ती है तो ग़रीब का ही।

अनेकों बार क्रोध से हमें लाभ भी पहुँचता है। अभी-अभी जो हुआ, तुमने अपनी आँखों देखा है। मेरी नाराज़गी पर गाड़ीवाला ड़र गया और भाग गया। इससे हमें तीन रुपयों का फ़ायदा हुआ। मेरे दैनिक जीवन में भी ऐसा ही होता है। कुली और नौकर मेरी नाराज़गी को देखकर भय से थर्रा जाते हैं। जो भी काम सौंपूँ, चुपचाप करते हैं। जो भी मज़दूरी दूँ, चपचाप ले लेते हैं। मुझसे सवाल करने का प्रश्न ही नहीं उठता। तुम्हीं सोचो कि इससे हमारा कितना फ़ायदा होता है। धनवान के क्रोध का प्रभाव ग़रीब पर बहुत ही अद्भुत होता है। यह मेरा निजी अनुभव है। इसीलिए मैं नाराजी कम करने की चेष्टा नहीं करता, साथ ही अधिक नाराज होने का नाटक करके अपना काम निकाल लेता हूँ।'' यह कहते हुए वह झुका, मानों उसेकुछ याद आ गया हो और बोला ''यह देखो मुकुँद, मैंने जो कहा, उसका यह गवाह है। मेरा क्रोध देखकर गाड़ीवाला काँप उठा और बेतहाशा भाग गया। दो रुपये भी यहीं छोड़कर चला गया। हमारे पाँच रुपये हमारे पास ही रह गये''। कहते हुए उसने ज़मीन पर गिरे दोनों रुपये ले लिये।

''तुम्हारी बातें कुछ-कुछ सच लग रही हैं'' कहता हुआ मुकुँद अचानक चौंक उठा। उसने कहा ''परशुराम, तुम्हारी नाराज़गी से मैने तो उस गाड़ी में रखी अपनी थैली की बात ही भुला दी। उसमें सोने के गहने हैं, जिन्हें तुमने लाने को कहा था। तुम्हारी नाराज़गी से फ़ायदा हुआ गाड़ीवाले को। सचमुच तुम्हारी नाराज़गी से जैसे तुमने कहा, लाभ ही होता है पर अपना नहीं, दूसरों का।''
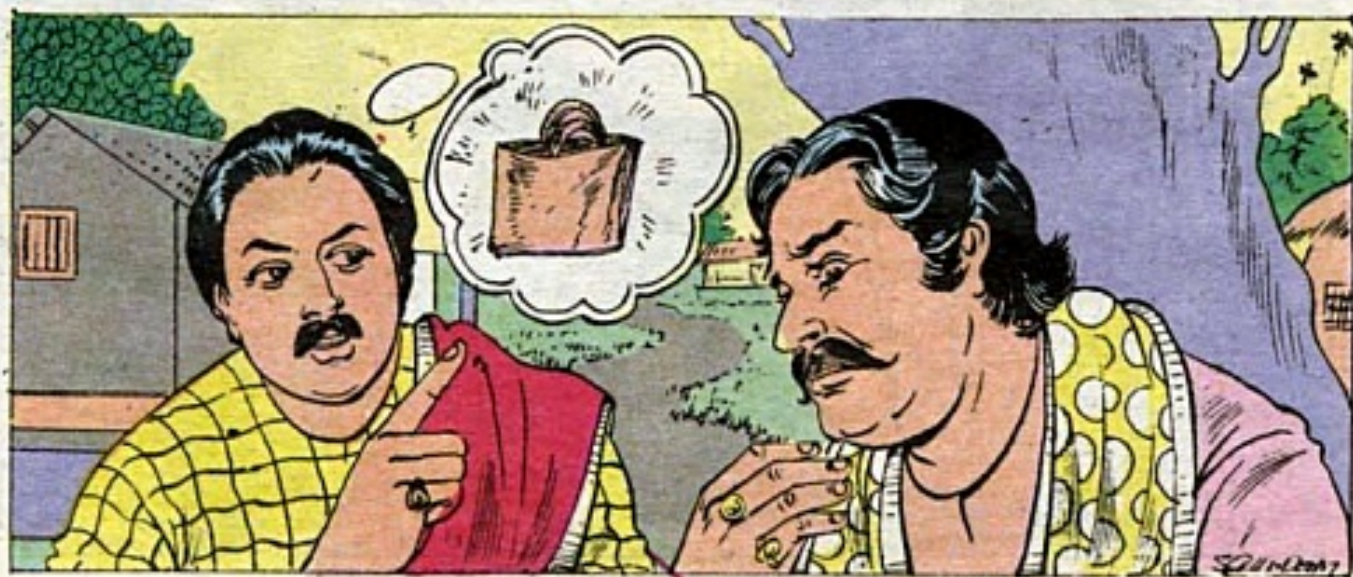
महाभारत - ९

भीष्म की बातों पर लज्जित होती हुई सत्यवति ने कहा कि उन दिनों में जब मैं नाव चला रही थी, तब पराशर महर्षि द्वारा मैं कृष्णद्वैपायण की माँ बनी।'' उसने अपना वह वृत्तांत सुनाया और कहा ''वह पराशर महर्षि द्वारा जन्मा मेरा पुत्र है। उसने घोर तपस्या की है। उसके द्वारा भरतवंश को चिरस्थायी रखेंगे''।

इस प्रस्ताव की स्वीकृति भीष्म ने दी। सत्यवति ने ध्यान- मग्न होकर कृष्णद्वैपायण नामक व्यास का स्मरण किया। वह प्रकट हुआ और पूछा ''माते, आपनेमेरा स्मरण क्यों किया?'' सत्यवति ने अपना उद्देश्य बताया और कहा ''तुम तो जानते ही हो कि मेरे दोनों पुत्र स्वर्गवासी हो चुके हैं। भीष्म ने तो प्रतिज्ञा की थी कि वह आजन्म ब्रह्मचारी बना रहेगा। किसी भी स्थिति में वह अपनी प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ेगा। मेरे कोई पोते नहीं हैं, जो सिंहासन पर बैठ सकें। इतना विख्यात भरतवंश यहीं समाप्त हो जाए, यह मैं कदापि नहीं चाहती। हम दोनों की तीव्र इच्छा है, कोई उत्तराधिकारी उत्पन्न हो और भरतवंश की परंपरा को बनाये - रखे। यह गुरुतर कार्य तुम्हीं से संभव होगा। इसीलिए मैने तुम्हारा स्मरण किया।'' व्यास ने अपनी सम्मति दी। सत्यवति ने तदुपरांत कृष्णद्वैपायण को समझाया कि वह क्या चाहती है और उसे क्या करना होगा।

सत्यवति ने उस दिन रात को अंबिका से बताया ''तुम अपने को सजाकर अंत:पुर के अपने कक्ष में पतीक्षा करो। वहाँ तुम्हारा

'बहनोई' आयेगा। उसके द्वारा संतान देकर इस वंश को बनाये रखो।'' अंबिका ने सोचा कि वह 'बहनाई' भीष्म है। पर उस रात को उसके कक्ष में व्यास आया। व्यास की श्वेत दाढ़ी, काला आकार तथा लाल आँखें देखकर अंबिका भयभीत हो गयी और आँखें बंद कर ली। उसका वह विकृत रूप उससे देखा नहीं गया। उसने व्यास को इसके पहले कभी भी देखा नहीं था, उसके बारे में सुना भी नहीं था। भय से दोनों आँखें बंद रखने के दोष के कारण जन्मा धृतराष्ट जन्म से ही अंधा बन गया।

इससे सत्यवति बहुत ही निराश हो गयी। उसने पुन: एक और बार व्यास का स्मरण किया। वह फिर प्रत्यक्ष हुआ।

उस दिन सत्यवति ने अंबालिका से कहा ''आज रात को एक मुनि तुम्हारे पास आयेगा। उनके द्वारा एक उत्तम पुत्र को जन्म देकर इस वंश का उद्धार करना''।

व्यास के आकार को देखकर अंबालिका ने भयभीत हो अपनी आँखें तो बंद नहीं कीं, किन्तु पीली हो गयी। फलस्वरूप पीले शरीर का पाँडु पैदा हुआ।

सत्यवति को इस जन्म से भी तृप्ति नहीं हुई। उसने एक और बार अंबालिका से कहा '' इस बार ही सही, योग्य व स्वस्थ पुत्र को जन्म दो''।

व्यास का स्मरण आते ही अंबालिका का हृदय घृणा से भर गया। वह नहीं चाहती थी कि पुन: व्यास से उसका मिलन हो, इसलिए उसने उस रात को अपनी जगह पर एक दासी को सुला दिया।

व्यास के द्वारा दासी का भी एक पुत्र हुआ, जिसका नाम था विदुर।

इस प्रकार जन्मे धृतराष्ट्र, पाँडु तथा विदुर जब बड़े हो रहे थे, तब भीष्म ने राज्यभार अपने कंधों पर लिया और बड़ी ही सक्षमता के साथ उसे संभाला। उस अवधि में प्रजा सुखी थी और संतृप्त भी। देश शश्यश्यामल था। भीष्म ने उन तीनों को क्षत्रिययोग्य विद्याएँ सिखलायीं। समस्त वेद तथा नीतिशास्त्रों का पठन करवाया।

इन तीनों में से धृतराष्ट बलशाली था। पाँडु धनुर्विद्या में प्रवीण था। विदुर धर्मशास्त्र में पारंगत था। कालक्रमानुसार उनमें से किसी का

राज्याभिषेक कराना होगा। भीष्म के सामने यह गंभीर समस्या उत्पन्न हो गयी कि किसे सिंहासन पर आसीन करावें। धृतराष्ट तो जन्म से अंधा है। विदुर दासी-पुत्र है। अतः विवश होकर भीष्म ने पाँडु को सिंहासन पर बिठाया, उसे राजा बनाया।

अब वे तीनों विवाह-योग्य हुए। भीष्म सोचने लगा कि इसके लिए योग्य कन्याएँ कहाँ होंगीं ? गांधार राजा सुबल की पुत्री थी गांधारी। भीष्म को ज्ञात हुआ कि गांधारी को भगवान शिव ने वर दिया था कि उसके सौ पुत्र होंगे।

कुछ ब्राह्मणों को भीष्म ने सुबल के पास भेजा और कहलाया कि वे अपनी पुत्री का विवाह धृतराष्ट्र से करायें।

सुबल जानता था कि धृतराष्ट जन्म से अंधा है, फिर भी उसने इस विवाह के लिए अपनी सम्मति दी। क्योंकि धृतराष्ट बहुत ही बड़े वंश का है और ऐसे वंशज से अपनी पुत्री का विवाह रचाना अहोभाग्य है।

गांधारी को जब मालूम हुआ कि उसका पति अंधा है तो उसने अपनी आँखों पर पट्टी बाँधकर अंधी ही बनी रहने का निश्चय किया। वह नहीं चाहती थी कि पति अंधेपन के कारण देख ना पाये और वह देख सके। इसलिए उसने ऐसा निश्चय किया। उसने सोचा कि पति ही पत्नी के लिए सब कुछ है। उसके सुखः दुख ही उसके भी सुख-दुख हैं। इतने बड़े राजवंश में उसका विवाह होने जा रहा है, यही बहत बड़ी बात है। उसके निर्णय से उसके माता-पिता भी बहुत ही प्रसन्न हुए। उसका बड़ा भाई शकुनि
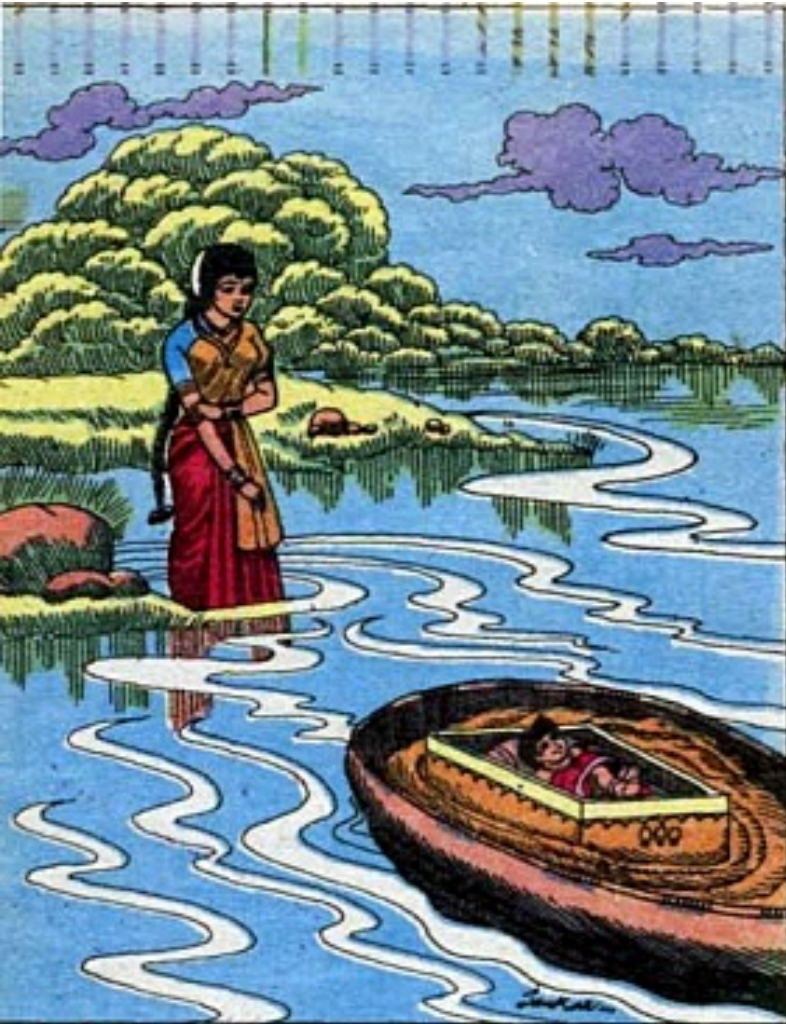
उसे हस्तिनापुर ले गया और उसका विवाह रचाया। भीष्म से श्रेष्ठ पुरस्कार पाकर, अपनी बहन को हस्तिनापुर में ही छोड़कर शकुनि स्वदेश लौटा।

अब रही पाँडु के विवाह की समस्या। कुंती नामक यादव कन्या के बारे में भीष्म ने सुन रखा था।

शूर, यादव जाति के प्रमुखों में से एक था। वह वसुदेव का पिता था। उसकी पृथा नामक एक पुत्री थी।

शूर की फूफी का बेटा था कुंतिभोज। उसकी कोई संतान नहीं थी। पृथा को उसने गोद लिया। कुँतिभोज के घर जो भी आ-जाया करते थे, उनका आतिथ्य करती थी पृथा। एक बार उनके यहाँ मुनि दुर्वास आया। वह पृथा के किये गये सत्कार से बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने उसे एक मंत्र बताया और कहा "पुत्री, यह मंत्रोच्चारण करने पर, जिस भगवान का दर्शन करना चाहोगी, कर पाओगी। वह भगवान प्रत्यक्ष होगा और तुम्हें एक उत्तम पुत्र प्रसादेगा।"

एक दिन कुंती के मन में आया कि इस मंत्र की सच्चाई की परीक्षा ली जाए। सूर्य का स्मरण करती हुए उसने मंत्र पढ़ा। तक्षण ही सूर्य प्रत्यक्ष हुआ। यद्यपि उसने पुत्र की इच्छा प्रकट नहीं की, फिर भी सूर्य के कारण वह गर्भवती हुई। कवच-कुंडल के साथ उसका एक पुत्र जन्मा। अविवाहिता माँ बने, यह धर्म-विरुद्ध है, इसलिए उसने उस शिशु को एक पेटी में रखा और उसे नदी के प्रवाह में छोड़ दिया।

वह पेटी एक सूत को मिली। उस सूत ने सूर्य जैसे प्रकाशमान एक शिशु को उस पेटी में पाया। उसे असीम आनंद हुआ। उसने उस शिशु को अपनी पत्नी राधा के सुपुर्द किया। उसने बड़े प्यार से उस शिशु को पाला और पोसा। यही शिशु है कर्ण।

इस घटना के बाद कुंतिभोज ने अपनी पुत्री के स्वयंवर की घोषणा की। पाँडु भी इस स्वयंवर में उपस्थित था। कुरुवंश में जन्मे, संपन्न तथा सुँदर दिखनेवाले पाँडु के गले में कुंती ने वरमाला डाली। कुँतिभोज ने अपनी पुत्री का विवाह बड़े

लेंगे। यह रस्म पूरी कीजिये और मेरी पुत्री को ले जाकर अपने ही यहाँ विवाह कराइये" शल्य ने बड़े आनंद से कहा।

भीष्म ने सोना, रत्न, आभूषण, वस्त्र, वाहन आदि दिये और माद्रि को हस्तिनापुर ले आया। उन दोनों का विवाह करवाया। पाँडु दोनों पत्नियों के साथ सुख से अपना जीवन बिताने लगा।

इसके एक महीने के बाद पाँडु के मन में विचार आया कि दिग्विजय यात्रा करूँ। उसने इसके लिए आवश्यक प्रबंध किये और भीष्म, ब्राह्मणआदियों का आशीर्वाद पाकर यात्रा के लिए निकल पड़ा। उसने पहले दशार्ण देशों को जीता। फिर मगध राज्य पर आक्रमण किया और युद्ध में राजो को मार डाला। मगध, काशी आदि देशों को उसने अपने अधीन किया। अपने साथ बहुत-सी संपत्ति लेता हुआ हस्तिनापुर लौटा।

वैभव से किया। उन्हें अपार संपत्ति देकर हस्तिनापुर भेजा। उनके लिए एक पृथक अंत:पुर का निर्माण हुआ। दोनों पति-पत्नी उसमें समस्त सुखों का अनुभव करने लगे।

भीष्म ने निश्चय किया कि पाँडु का विवाह एक और कन्या से भी करूँ। मुद्रराजा शल्य की एक बहन थी। भीष्म अपने परिवार सहित शल्य की राजधानी गया।

शल्य ने भीष्म का स्वागत किया और पूछा कि आपके आगमन का कारण क्या है?

भीष्म ने कहा कि अपनी बहन माद्रि का विवाह हमारे पाँडु राजा से कीजिये।

"इससे अधिक मुझे और क्या चाहिये। परंतु हमारे वंश के आचार के अनुसार हम कन्याशुल्क

भीष्म आदि बड़ों ने उसका स्वागत-सम्मान किया। विविध देशों से जो संपत्ति ले आया था, उन्हें उसने भीष्म, सत्यवति, विदुर तथा माताओं को प्रदान किया। वे बहुत ही आनंदित हुए।

इसी धन से धृतराष्ट्र ने अनेकों अश्वमेध याग किये।

फिर पांडु राजा अपनी दोनों पत्नियों को लेकर विहार करने हिम प्रांतों के अरण्यों में गया। उनके लिए आवश्यक सामग्री धृतराष्ट्र हस्तिनापुर से भेजता रहा।

भीष्म ने विदुर का विवाह देवक नामक राजा की पुत्री से करवाया।

एक दिन व्यास धृतराष्ट के घर आया। वह बहुत भूखा था। गांधारी ने अतिथि-सत्कार किया। व्यास उससे बहुत ही प्रसन्न हुआ और कहा "पूछो, तुम्हें क्या चाहिये?" गांधारी ने कहा कि मुझे ऐसा वर दीजिये, जिससे मेरे सौ समर्थ पुत्र हों। व्यास ने उसकी इच्छा पूरी की। गाँधारी गर्भवती हुई। दो वर्षों तक वह गर्भ वहन करती रही। इसी बीच उसे समाचार मिला कि कुंति का एक पुत्र हुआ है और उसका नाम युधिष्ठिर है। व्यास ने वर तो दिया, परंतु अब तक वह माँ नहीं वन पायी। इसपर गांधारी बहुत ही दुखी हुई। अपने पति से कहे बिना ही अपने गर्भ को वह ज़ोर-ज़ोर से पीटने लगी। दो वर्षों तक वहन करती हुई उस पिंड के खंडों को उसने फेंक देना चाहा।

धृतराष्ट्र को देखने के लिए आये हुए व्यास को यह बात मालूम हुई। गांधारी से उसने पूछा कि तुमने ऐसा अनर्थ क्यों किया?

गांधारी विलाप करती हुई बोली "आपने तो वर दिया था कि मेरे सौ पुत्र होंगे। दो वर्षों से मैं गर्भवती रही, पन्तु मैं माँ बन नहीं पायी, मेरे बच्चे नहीं हुए। इस बीच मुझे मालूम हुआ कि पाँडु राजा की पत्नी कुंति ने एक पुत्र को जन्म दिया है। मुझे यह दुख खाये जा रहा था। इसलिए मैं अपने पेट को पीटती रही। फलस्वरूप मेरा गर्भस्राव हुआ है और यह गर्भ टुकडों में बँटकर गिर गया है।"

"मेरा वर कभी भी व्यर्थ नहीं जायेगा,"

कहते हुए व्यास ने गांधारी के गर्भ से गिरे सौ मॉंस खंडों को पानी से धुलवाया और एक-एक खंड को घी के गागर में रखवाया।

तब गांधारी ने कहा "लगता है कि ये सौ खंड सौ पुत्र होंगे। अब ऐसा वर दीजिये, जिससे उनके साथ-साथ मेरी एक पुत्री भी हो। पुत्री से पुण्य भी मिलेगा।"

व्यास ने यह वर भी उसे प्रदान किया। फिर वह वहाँ से चला गया।

इसके एक वर्ष बाद एक गागर से पहला पुत्र निकला। उसके पैदा होते ही कितने ही बुरे शगुन हुए।

धृतराष्ट यह देखते हुए बहुत ही घबड़ा गया। उसने भीष्म, विदुर, मंत्रियों तथा ब्राह्मणों को बुलवाया और पूछा "युधिष्ठर का जन्म तो पहले ही हो चुका है। अब जो यह जन्मा है, क्या वह राजा बनने की योग्यता रखता है? सोच-विचारकर बताइये"।

उन्होंने कहा "महाराज, यह बुरे शगुनों के साथ जन्मा है। यह वंश-विनाशक है। इसे त्यजिये। सौ पुत्रों में से एक पुत्र ना रहा तो क्या हो जायेगा ?"

विदुर ने भी खूब सोचने के बाद यही बात कही। किन्तु पुत्र-प्रेम के वश हो धृतराष्ट ने उनकी बातें अनसुनी कर दीं।

इस प्रकार पहले दुर्योधन का जन्म हुआ। फिर बाद गागर से दुश्शाशन आदि पुत्र तथा दुश्शला नामक पुत्री हुई। गांधारी जब गर्भवती थी, तब अपनी सेवाओं के लिए धृतराष्ट्र ने एक वेश्या स्त्री को रख लिया। जिस साल धृतराष्ट्र के सौ पुत्र हुए, उसी साल उसने ययुत्स नामक पुत्र को जन्म दिया।

धृतराष्ट्र ने अपने पुत्रों को अनेकों विद्याएँ सिखलायीं और उनके योग्य कन्याओं से उनका विवाह रचाया।

बचपन से ही सब भाई अग्रज दुर्योधन की बात मानते थे। उसकी आज्ञाओं का पालन करते थे। दुर्योधन भी अपने भाइयों को बहुत चाहता था। वह बहुत ही महत्वाकांक्षी था। सिंहासन पर आसीन होने के लिए वह व्याकुल रहता था। धृतराष्ट भी उसे इस दिशा में प्रोत्साहन देता था।

भिक्षा - दान

लक्ष्मण दानी था, उदार था और था बहुत ही नेक इन्सान। उसकी पत्नी माधवी भी बिल्कुल अपने पति के ही स्वभाव की थी। धीरे-धीरे उसकी पूरी संपत्ति उसके हाथ से जाती रही और वह ग़रीव हो गया। अपनी जीविका चलाने के लिए उसने अपने घर के पिछवाड़े में तरकारियों के बीज बोये। वे जब पौधे बने, तब उनमें तरकारियाँ खूब फलने लगीं। पर उन्हें बेचना उससे संभव नहीं हो पाया। स्वभाव से वह दानी था, इसलिए उन्हें ना बेचकर अड़ोस-पड़ोस के लोगों के यहाँ भेजा करता था।

फिर उसने सोचा कि अध्यापन-कार्य करूँ और अपनी जीविका चलाऊँ। चूँकि वह शास्त्रों में निष्णात था, इसलिए लोग उसके यहां आने लगे और पढ़ने लगे। जो भी उनके घर आता उन्हें खाली हाथ लौटाता नहीं था। उन्हें कुछ ना कुछ देकर ही भेजता था। पढ़ाने से उसे कोई शुल्क तो नहीं मिला, उल्टे आने-जानेवालों को देते-देते उसके पास जो बचा-खुचा था, ख़र्च हो गया।

उसने अपनी कमज़ोरी को जाना। उसे मालूम हो गया कि इन सब कामों से कोई आमदनी होनेवाली नहीं है। अतः एक दिन कुल्हाड़ी हाथ में ली और जंगल गया। दिन भर लकड़ी काटने के बाद उन्हें जमा करके जब गाँव लौट रहा था, तब एक ग़रीब आदमी उसके पास अया। उसने कहा "महाशय, मैं ग़रीव हूँ। खाने के लिये भी मेरे पास कुछ भी नहीं है। मेरी पत्नी का अकस्मात् देहान्त हो गया है। जब तक वह जीवित रही, उसे सुखी रख नहीं सका। अब तो मेरी इतनी दयनीय स्थिति है कि उसके दहन-संस्कार के लिए भी लकड़ियाँ खरीदने में असमर्थ हूँ। आप मुझपर दया करके मेरी मदद करेंगे तो ज़िन्दगी भर आपका आभारी रहूँगा। अच्छे दिन जब आयेंगे, तब आपका ऋण भी चुकाऊँगा।"

लक्ष्मण ने लकड़ियाँ उसे दे दीं और ख़ाली हाथ घर लौटा। उसने सब बातें अपनी पत्नी से

लगेगा, आत्महत्या ही एकमात्र रास्ता होगा तब उस दिन स्नान करने के बाद भगवान की पूजा करो। अपने दोनों हाथों से मेरी तस्वीर को छूना। इसके तुरंत बाद एक भिखारी तुम्हारे घर आयेगा। वह जो भी माँगेगा, देना। इससे तुम्हारी भलाई होगी''।

पत्नी ने ये बातें याद दिलायीं, तो लक्ष्मण ने निश्चय कर लिया कि उसे क्या करना है। दूसरे दिन सबेरे-सबेरे उठा, नहाया, भगवान की पूजा की और दोनों हाथों से पिताश्री की तस्वीर का स्पर्श किया। जैसे ही उसने स्पर्श किया, एक भिखारी की पुकार उसे सुनायी पड़ी, जो भीख माँगते हुए गिड़गिड़ा रहा था, ''बाबा, भीख दो, मुट्ठी भर चावल दो ''। माधवी ने ढूँढ़ा तो उसे मुट्ठी भर चावल डिब्बे में मिले। वह जब भिखारी की झोली में डाल रही थी तब उसने कहा ''एक दाना अपने लिए रखो माँजी, वही अक्षय होगा''। माधवी ने ऐसा ही किया। फिर उसने वह दाना डिब्बे में डाला। आश्चर्य कि डिब्बा चावल से भर गया।

बतायीं और कहा ''हम तो किसी से भीख नहीं माँग सकते। व्यापार करना आता नहीं। जीवन चलाना दुर्भर हो गया है। आत्महत्या के अलावा कोई रास्ता नहीं दिखता''।

माधवी ने पति को शांत करते हुए कहा ''जिसने बीज बोया है, वही फल भी देगा। आप चिंतित मत होइये। मरते समय मामाश्री ने जो कहा, वही करेंगे''।

लक्ष्मण का पिता जब मरने जा रहा था तब उसने अपने बेटे से कहा ''तुम्हारे दान देने का यह स्वभाव तुम्हें कष्टों में फँसा देगा। मैं तुमसे यह नहीं कह सकता कि इस अच्छे काम को छोड़ दो, अपनी सद्‌बुदिद्ध का त्याग करो। जिस दिन जीना तुम्हारे लिए भारी लगेगा, दुर्भर

उस दिन से उस घर में चावल, दाल, तरकारियाँ धन आदि तक अक्षय होते आये। लक्ष्मण और माधवी ने अपने सहज दान-गुण को ज़ारी रखा और सुख से रहने लगे।

अपनी समृद्धि के कारक उस भिखारी से मिलने की तीव्र इच्छा थी माधनी को। वह कौन होगा, कहाँ से आया होगा? मामाश्री को मरने के पहले ही कैसे मालून हुआ होगा कि वह आयेगा?

कुछ दिनों के बाद पति-पत्नी दूर के रिश्तेदारों के यहाँ विवाह में भाग लेने शहर गये। विवाह का भोज समाप्त होने के बाद ग़रीबों में अन्नदान संपन्न हुआ। माधवी ने उनमें से एक भिखारी को ग़ौर से देखा और उसे पहचाना। उसने उससे एकांत में मिलने का निश्चय किया। अपने दूर के एक रिश्तेदार से उसने कहा "भोजन समाप्त होने बाद उस भिखारी को अवश्य ही मेरे पास भेजियेगा"।

इसपर आश्चर्य प्रकट करते हुए उसने कहा "उससे आपको क्या काम? वह बहुत बड़ा लोभी है। भर पेट भर खाना दो, जी भर के चावल दो, फिर भी वह दुसरों के घर जाकर भीख माँगता है, हाथ फैलाता है। एकदम बेशर्म है वह।"

भोजन हो जाने के बाद ख़बर देने पर भी वह भिखमंगा माधवी से मिलने नहीं आया। काम का बहाना करके वह जल्दी-जल्दी वहाँ से चला गया। माधवी यह जानने को बहुत ही तत्पर थी कि वह क्या करेगा और कहाँ जाएगा। उसने उसका पीछा किया। लक्ष्मण भी अपनी पत्नी के साथ-साथ गया।

भिखमंगा वहाँ से एक कंजूस के घर गया। उसने भिखमंगे को गालियाँ दीं और उसे वहाँ से भगाया। यों इस प्रकार वह दो-तीन घर गया। सब जगह उसे नकारात्मक जवाब ही मिला।

तब लक्ष्मण दंपति उसके पास आये और बोले "महाशय, आप तो कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं। आप ही की महिमा से हम आज सुखी हैं। मज़े से दिन काट रहे हैं। हमारी समझ में नहीं आता कि घर-घर जाकर आपको भीख माँगने की क्या ज़रूरत है ? आप आराम से हमारे ही घर में रह सकते हैं"।

भिखारी ने कहा "तुम लोगों के घर में बैठा रहूँ तो मेरा समय कैसे कटेगा? दो-चार घरों में जाना है। भीख माँगनी है। उनसे गालियाँ खानी हैं। किसी के पास सब कुछ हो, फिर भी वह किसी को कुछ नहीं देता तो समझिये कि उसका सब कुछ गया। ऐसी गयी संपत्ति ही तुम्हारे घर में अक्षय बनकर रह रही है"।

लक्ष्मण चकित हुआ और बोला "तो क्या

हमारे लिए ही आप घर-घर भटक रहे हैं?"

"इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इस आकार में तुम लोगों ने मुझे नहीं पहचाना। मैं तुम्हारा बाप हूँ"। भिखारी ने कहा। बेटे और बहू ने उसे तक्षण पहचान लिया और उसके पैरों पर जा गिरे। दोनों को उसने उठाया और कहा "जब तक मैं हूँ, तुम्हें कोई असुविधा नहीं होगी। घर लौटो और सुख से रहो।"

पति-पत्नी ने हठ किया कि आप हमारे साथ घर आइयेगा। तो उसने कहा "तुम दोनों बेवकूफ़ हो। क्या तुम लोग भूल गये कि बहुत पहले ही मेरी मृत्यु हो गयी थी।" "तो क्या हुआ ? आपने फिरसे मानव जन्म धारण किया है ना?" माधवी ने कहा।

सहानुभूतिपूर्वक उसे देखते हुए भिखारी ने कहा "मरे हुए लोगों में कोई इच्छा ना हो, कोई चिन्ता ना हो तो वे भगवान के आश्रय में पहुँच जाते हैं। मेरा आश्रय तो तुम लोगों के घर में रखी हुई तस्वीर है। अब भी तुम लोग इस बात से वाकिफ़ नही हो कि पैसा कैसे कमाने हैं, कैसे जुटाने हैं। हाँ, दान देने का तुम्हारा स्वभाव अच्छा है, तुमने अपनी सारी जायदाद दान-धर्म में खो दी। जब तक तुम कमाना नहीं सीखोगे और उसमें से एक भाग दान में देने की आदत नहीं डालोगे तब तक अनिवार्य रूप से मुझे भिखारी का जीवन बिताना ही पड़ेगा। इसीलिए मैने मानव-रूप धारण किया है। मेरा तुम्हारे घर में रहना संभव है ही नहीं। यह प्रकृति-विरुद्ध है।"

पिता का कहा सुनकर आँसू बहाता हुआ लक्ष्मण पत्नी से बोला "दान देते हुए मैं इस भ्रम में था कि मैं दरिद्रों की सेवा कर रहा हूँ। अभी-अभी समझ पाया हूँ कि ऐसा करके मैंने अपने पिता को कष्टों में डाल दिया है। आगे से जो भी कमाऊँगा, पिताश्री की ही दी हुई भीख समझकर उसे सुरक्षित रखूँगा और स्वयं धनार्जन में लग जाऊँगा। तभी पिताश्री का विमोचन होगा।"

अपनी कमाई ना होते हुए भी, पुर्वजों की संपत्ति को कुछ मूर्ख दान-धर्मों में गँवा देते हैं। वे यह भूल जाते है कि ऐसा करके वे अपने पूर्वजों के दिलों को दुखा रहे हैं।
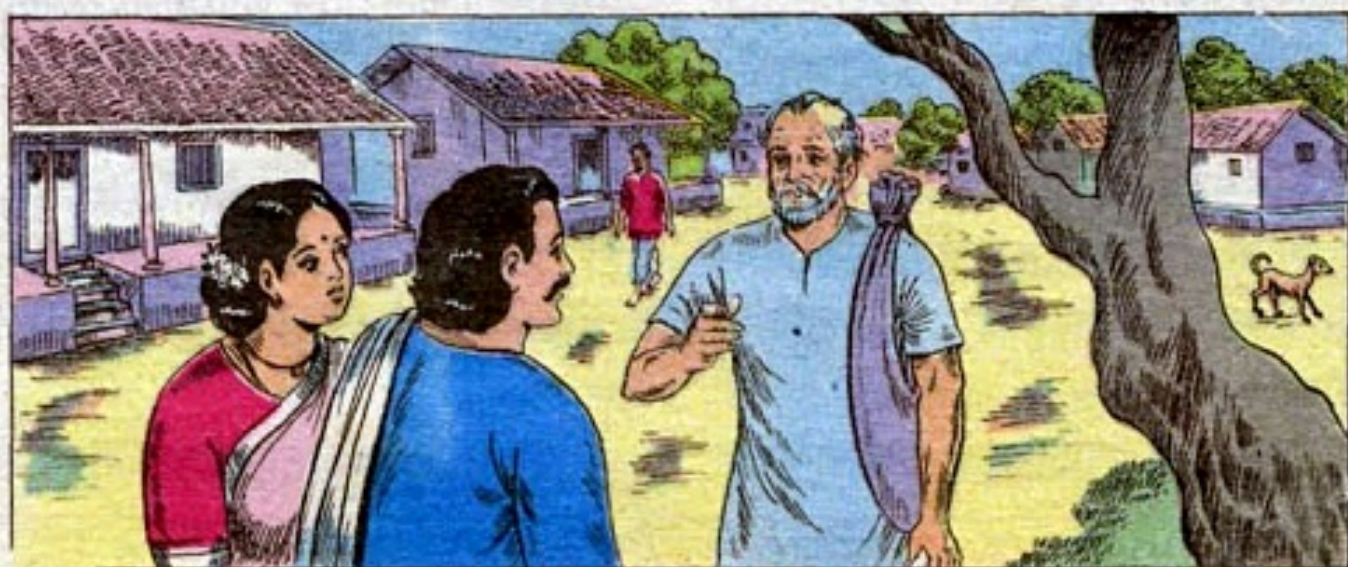
'चन्दामामा' की ख़बरें

मगर भी अध्यापक हैं।

प्रकृति का अध्ययन करने के लिए हम साधारणतया ग़ौर से देखते हैं- पर्वत, मेघ, समुद्र, नदी आदि को। फूलों को सूँघते हैं। पशु-पक्षियों को भी देखते रहते हैं। ऐसा देखने पर प्रकृति के संबंध में हमारे जो संदेह हैं, दूर होते हैं। एक प्रकार से वे हमारे लिए अध्यापक जैसे हैं। थायलांड के पामिट्रि नामक एक गाँव में एक पाठशाला के समीप के एक गड्ढे में

मगर-मच्छों का पालन-पोषण हो रहा है। उस पाठशाला में हज़ार से ज़्यादा विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विद्यार्थियों के माता-पिताओं की माँग थी कि वे मगर वहाँ से हटा दिये जाएँ। क्योंकि उन्हें भय था कि इन मगरों से शायद विद्यार्थियों को हानि पहुँच सकती है। लेकिन पाठशाला के अधिकारी ने उन्हें स्पष्ट बताया ''इनसे विद्यार्थियों को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचेगी। प्रकृति के रहस्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए ये अध्यापक का कार्य करते हैं। विद्यार्थियों को इनसे लाभ ही पहुँचता है''।

पालतू जानवरों से प्रेम

कुत्तों, बिल्लियों तथा तोतों को पालना कुछ लोग बहुत पसंद करते हैं। नेथरलांड की राजधानी हावे नगर में निवास करती हुई एक महिला कुत्तों, तोतों तथा मैनों को नहीं, बल्कि बिच्छुओं, साँपों तथा नेवलों का पालन-पोषण करती है। वह उन्हें अलग-अलग पिंजड़ों में बंद रखती है और घर में ही उन्हें पालती है। इस वजह से उसका पति और उसके दो बच्चे उसे छोड़कर जाने के लिए तैयार हो गये। उन्होंने उससे स्पष्ट बता दिया कि इन जंतुओं को हटा देने पर ही हम घर में रहेंगे।

मालिक के लिए

दक्षिण केरल में स्थित मैलंमूड नामक जगह पर एक प्रशिक्षित हाथी है। बीस दिनों तक लगातार उससे बड़े-बड़े लकडों को ढ़ोने का काम लिया जाता है। रात को महावत उसे एक पेड़ की जड़ से जंजीर से बाँधकर चला जाता है। बग़ल में नदी प्रवाहित होती रहती है। यथावत् एक दिन रात को महावत हाथी को बाँधकर चला गया। रात को नदी में बाढ़ आयी और पेड़ के चारों ओर पानी भर गया। फिर भी हाथी ने चिंघाड़ा नहीं। सबेरा होते-होते हाथी पूरी तरह से पानी में डूब गया। केवल उसकी सूंड ही दिखायी दे रही थी। उसकी यह हालत देखकर एक दूसरे महावत ने जंजीर खोल दी और उसे बाहर लाने का प्रयत्न किया। पर वह वहाँ से बिल्कुल नहीं हिला। जब उसका मालिक महावत आया और उसकी सूँड को सहलाया, तब वह तैरता हुआ किनारे पहुँचा।

पराक्रमी स्त्री

बहुत पहले की बात है। दुर्जय नामक राजा धर्मपुर का शासक था। साल में एक बार अपने सब सामंतों को धर्मपुर बुलवाता था।इस अवसर पर तीन दिनों तक उत्सव मनाये जाते थे। भोज और मनोरंजन का भी प्रबंध होता था।

इस साल भी सब सामंत धर्मपुर निमंत्रित हुए। सब के सब आनंद में डोल रहे थे। हर कोई अपनी-अपनी महत्ता बढ़ा-चढ़ाकर कहे जा रहा था। कोई अपने किले के रहस्यद्वार के बारे में कहता तो कोई अपने अरबी घोड़ों की श्रेष्ठता के बारे में। कोई अपने राज्य के स्वादिष्ट फलों के बारे में। यों वे सब सामंत अपना-अपना ढ़ोल पीट रहे थे।

किन्तु विजय नामक युवक चुप बैठा था। उसके मुँह से एक शब्द भी निकला नहीं था। वह पथ्थर की तरह स्थिर बैठा हुआ था। दुर्जन ने उसे ग़ौर से देखा और पूछा "क्यों विजय, सब लोग अपनी-अपनी विशिष्टताएँ बताते हुए थक नहीं रहे हैं और तुम हो, एकदम मौन बैठे हो। ऐसा क्यों?"

"अगर मुझे कहना भी हो तो अपनी पत्नी मालिनी के बारे में ही कहना होगा। लेकिन मेरी दृष्टि में यहाँ वह असंगत बात होगी। इसीलिए मैं चुप हूँ महाराज"। विजय ने कहा।

"बताना तो सही, तुम्हारी पत्नी में ऐसी क्या विशिष्टता है? यह सुनकर हमें भी आनंद होगा। क्या वह स्वप्न सुंदरी है? संगीत में क्या वह असमान है? अथवा पुष्पालंकरण में निपुण है? बताना कि तुम्हारी पत्नी किस क्षेत्र में योग्य है? दुर्जय ने पूछा।

विजय ने कहा "मेरी पत्नी में आपसे कथित समस्त विशिष्टताएँ हैं। परंतु सबसे बढ़कर उसकी विशिष्टता है, उसका साहस, उसका असाधारण पराक्रम। तलवार की लड़ाई में हो, तीरंदाज़ी में हो, गदा-युद्ध में हो, उसका सामना करने की शक्ति किसी में है ही नहीं।"

दुर्जन उसकी बातों से तैश में आ गया और बोला "मत भूलना कि यह बात यहाँ उपस्थित

रामनारायण यौबे

इतने योद्धाओं के सम्मुख कह रहे हो?''

''महाराज, इन सामंतों की बात छोड़िये। आप भी मेरी पत्नी के पराक्रम के सामने टिक नहीं पायेंगे। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है''। विजय ने दृढ़ स्वर में कहा।

दुर्जन उसकी बातोंसे और क्रोधित हो गया। उसे लगा कि विजय जान-बूझकर उसका अपमान कर रहा है। एक स्त्री से उसकी तुलना कर रहा है और दावा कर रहा है कि अपनी पत्नी के पराक्रम की तुलना में आप भी कुछ हैं ही नहीं। दुर्जन को अपनी वीरता पर नाज़ है। सामंतों की उपस्थिति में अपना यह अपमान उससे सहा नहीं गया। उसने तुरंत अपने दो अंगरक्षकों को बुलाया, और उनको आज्ञा दी ''इस दुष्ट को तक्षण बंदी बनाकर ले जाओ और पातालगृह में ड़ाल दो। इसे ज्वार की रोटियाँ ही खाने को दो''।

विजय विवश होकर राजा की आज्ञा के अनुसार पाताल गृह में अंगरक्षकों के साथ गया। सोचने लगा कि यहाँ से कैसे छुटकारा मिलेगा ?

विजय की पत्नी मालिनी अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थी। उत्सवों की समाप्ति के बाद भी जब वह लौट नहीं आया तो उसने अपने नौकरों को धर्मपुर भेजा। उनसे उसे मालूम हुआ कि महाराज ने उसे जेल में बंदी बनाकर रखा है।

तक्षण ही मालिनी ने अपने घोड़े को तैयार करवाया। कवच और शिरस्त्राण पहने। अपनी तलवार, बाण तथा लोहे की गदा ली। एक सौ सैनिकों को लेकर वह धर्मपुर गयी। नगर के बाहर
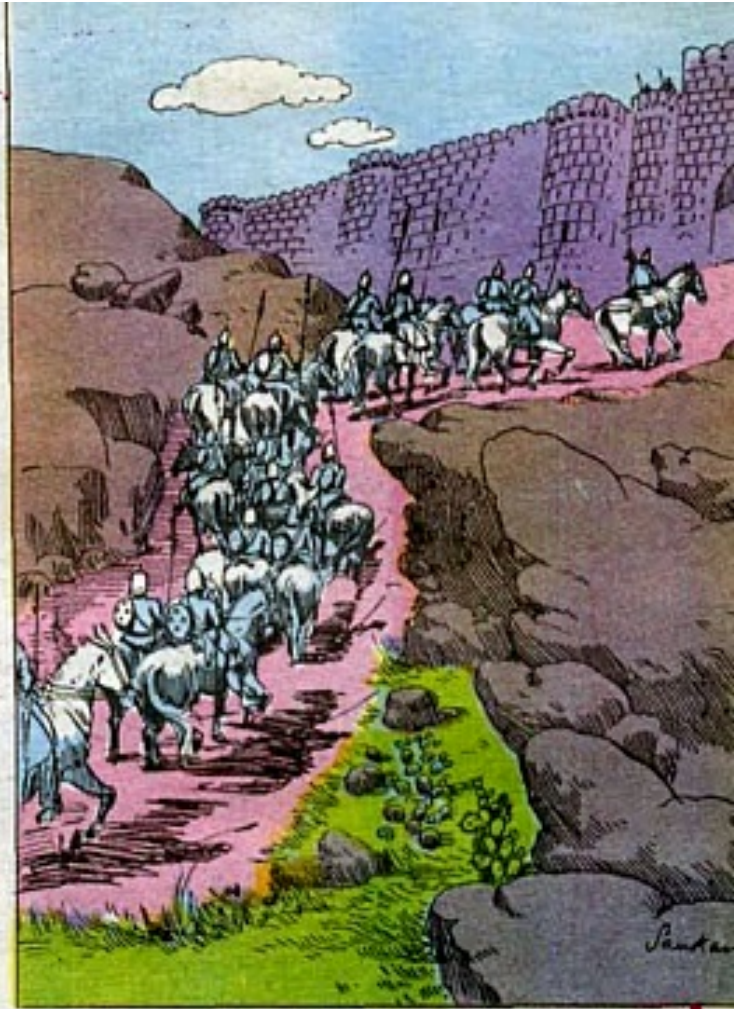
शिबिरों का प्रबंध किया गया। उसने उन शिबिरों को इस प्रकार फैलाया, जिन्हें दूर से देखनेवालों को लगता था कि बहुत ही शिबिर हैं और अनगिनत सैनिक उनके अंदर हैं। यह दृश्य देखने पर किसी को भी लगेगा कि इतनी बड़ी सेना के साथ लड़ पाना किसी भी राजा के लिए संभव नहीं है। मालिनी ने ऐसी व्यवस्था करके अपने युद्ध-कौशल का परिचय दिया। फिर वह अकेली ही दुर्जन महाराज से मिलने गयी।

पुरुष वेष में वीरोचित वस्त्र पहनी, आयी हुई मालिनी को देखकर दुर्जन निश्चेष्ट रह गया। वह निधड़क उसके सामने खड़ी हो गयी और बोली ''महाराज, मैं कलिंग सम्राट का दूत हूँ। आपसे दस हज़ार अशर्फियों का कर वसूल

करके ले आने की आज्ञा सम्राट ने दी है। उसी काम पर मैं यहाँ आया हूँ। आप देने से इनकार करेंगे तो मैं युद्ध के लिए सन्नद्ध होकर आया हूँ। हमारे चालीस हज़ार सैनिक आपके नगर के बाहर युद्ध के लिए तैयार बैठे हैं। आप तक्षण ही निर्णय कीजिये कि कर देंगे अथवा युद्ध करेंगे ?''

उसकी बातें सुनते ही दुर्जन ठंडा पड़ गया। कलिंग राजा से लड़ाई मोल लेना उसके लिए श्रेयस्कर नहीं। उसके पास इतनी बड़ी रक़म भी नहीं थी कि वह दे सके। चालीस हज़ार सैनिकों से लड़ाई करना भी कोई आसान बात नहीं। उसके लिए समय लगेगा। अपने सैनिकों को एकत्रित करना होगा और यह तक्षण ही संभव नहीं है। सब सामंतों को यह समाचार सूचित करने पर ही संभव हो पायेगा।

अच्छी तरह सोच-विचारकर दुर्जन ने कहा ''तुरंत मैं कोई जवाब दे नहीं पाऊँगा। इसके लिए मुझे तीन दिनों की अवधि चाहिये।''

''अगर आप मेरी एक शर्त स्वीकार करें तो मैं आपको तीन दिन की अवधि दे सकता हूँ। अपनी पुत्री से मेरा विवाह कीजिये'' मालिनी ने कहा।

दुर्जन इस शर्त को सुनकर हक्का-बक्का रह गया। उसने कहा ''इसका निर्णय भी एक दिन के बाद ही ले पाऊँगा। अपनी-बेटी की इच्छा भी जानना ज़रूरी है''।

''ठीक है, ऐसा ही कीजिये। कल तक अपनी बेटी की शादी मुझसे कराने का आवश्यक प्रबन्ध कीजिये। अथवा दो दिनों के बाद धनराशि दीजिये। इनमें से एक की भी पूर्ति ना होने पर युद्ध अनिवार्य है। आपको यह बताकर सावधान कर देना चाहती हूँ, कि मेरी सेना अद्‌भुत शक्ति रखती है। उनके पास ऐसे-ऐसे हथियार हैं, जिनसे आपको हराना मेरे बायें हाथ का खेल है। पल भर में आपकी सेना कुचल दी जायेगी। आपका राज्य आपसे छिन जायेगा। आप बंदी बना दिये जायेंगे। आपको कठोर दंड मिलेगा। आपकी पुत्री से ज़बरदस्ती ही सही, मैं विवाह कर लूँगा।'' मालिनी ने बताया। मालिनी की बातों से दुर्जन का दिल भय से कांप उठा।

दुर्जन ने अपनी पुत्री से दूत की बात बतायी। राजकुमारी झल्लाती हुई बोली ''छी, उससे मेरी शादी ? असंभव। वह तो देखने में औरत लग रहा

है। उसकी चाल-ढ़ाल, बात करने का उसका तरीक़ा एकदम औरत का है। मुझे तो लगता है कि वह मर्द नहीं, औरत है। मेरी समझ में नहीं आता कि आप उससे क्यों इतना घबरा रहे हैं''?

बेटी की बातें सुनकर दुर्जन में हिम्मत बंधी। उस दिन शाम को कलिंग के दूत को अपने यहाँ निमंत्रित किया और उसके साथ थोड़ी देर तक शतरंज खेलता रहा। हर खेल में दुर्जन बुरी तरह से हारता रहा। खेल ख़तम होने के बाद दोनों घोड़ों पर बैठकर बाग़ में गये।

''अस्त्र-विद्या में आपसे होड़ लगाना चाहती हूँ। मेरे कहे मुताबिक़ आप ज़रूरी इंतजाम करवाइये।'' मालिनी ने कहा। एक जगह पर तलवार गाड़ी गयी। उसके सामने एक जाल लटकाया गया। मालिनी ने कहा ''हम दोनों यहाँ से बाण बरसायेंगे। हमें अपने बाणों को जाल से होते हुए छोड़ना होगा और लटकती हुई तलवार के दो टुकड़े करने होंगे''।

दुर्जन ने एक के बाद एक कुल तीन बाण छोड़े। एक भी बाण जाल से होता हुआ नहीं गया। मालिनी ने अपने धनुष को टंकारा और बाण को अपने कानों तक खींचकर छोड़ा। वह बाण जाल से होता हुआ सीधा गया और तलवार के दो टुकड़े कर दिया। ठीक बीच में वह तलवार टूटी।

उसने कल्पना तक नहीं की कि ऐसा भी हो सकता है। दूत की शूरता देखकर उसे विश्वास हो गया कि उसके हाथों में उसकी हार निश्चित है। वह भय से काँप उठा।

उसके सामने कोई और चारा नहीं था। उसने अपनी बेटी से विवश हो रात को बताया ''तुम्हें दूत से शादी करनी ही पड़ेगी। वह औरत-सा दीखता है, पर है बहुत बड़ा बहादूर। शतरंज के
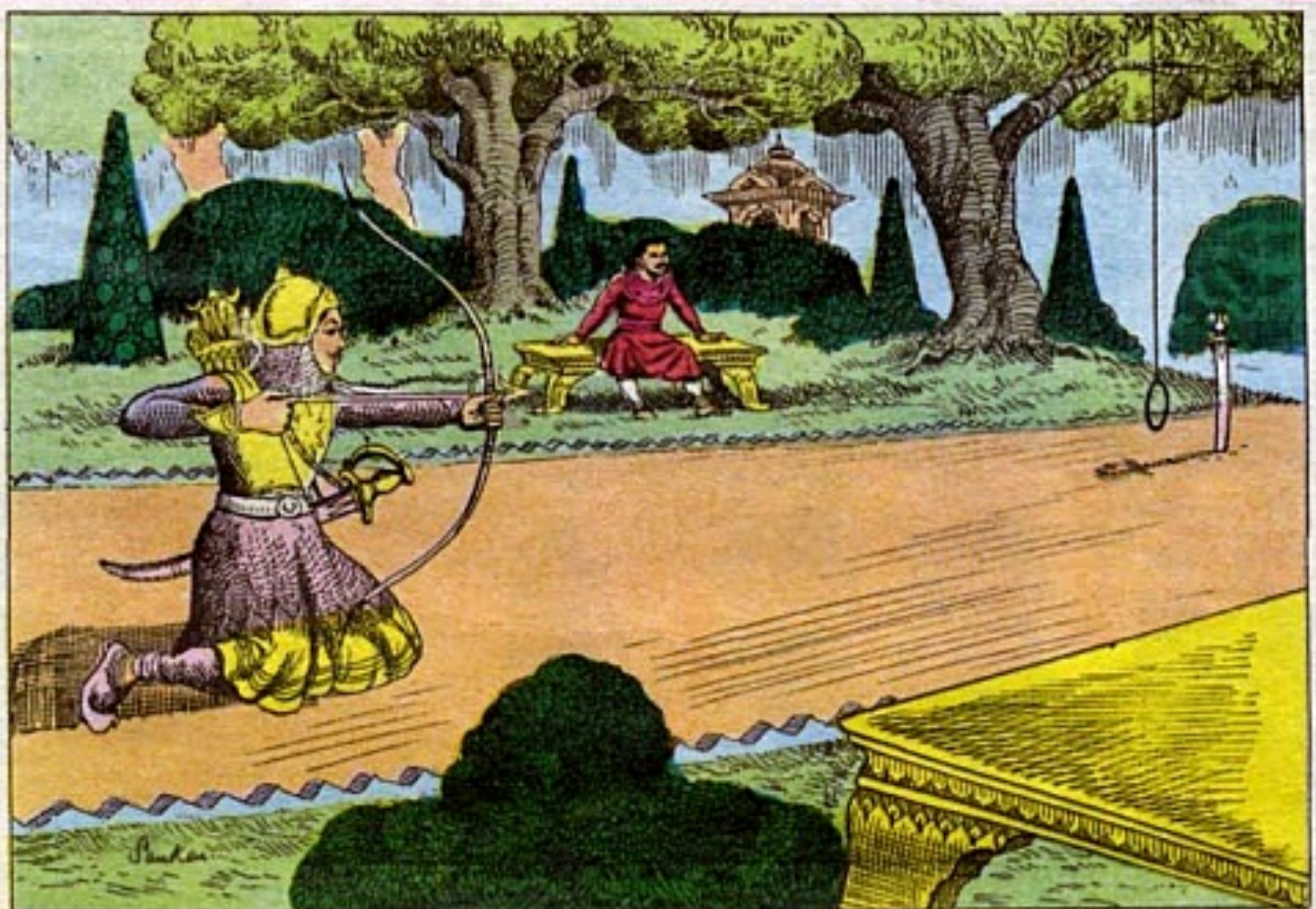
खेल में उसकी चतुराई देखी, युद्ध-विद्या में उसका नैपुण्य देखा। निस्संदेह ही वह असाधारण मनुष्य लगता है।" कहते हुए उसने दासियों को आज्ञा दी कि राजकुमारी दुलहन के रूप में सजायी जाए।

दूसरे दिन मालिनी ने राजा से पूछा "महाराज, आप अपनी बेटी की शादी मुझसे कर रहे हैं या नहीं ?"

राजा ने कहा "इसका आवश्यक प्रबंध-कर रहा हूँ"।

मालिनी अपने आप मुस्कुराती हुई बोली "अब गदा-युद्ध करने को मेरा जी चाहता है।" कहती हुई उसने लोहे की गदा हवा में उड़ायी और उसके नीचे गिरने के पहले ही उसे पकड़ ली।

"हे पराक्रमी, तुमसे युद्ध करनेवाला मेरे राज्य में कोई है ही नहीं। और रही मेरी बात। मैं तो वृद्ध हूँ" । राजा ने कहा।

"क्या आपके राज्य में कोई युवक है ही नहीं, जो मुझसे लड़ सके ? कारागृह में भी कोई क्या ऐसा पराक्रमी नहीं, जो मुझसे लड़ सके ? मैं किसी से भी युद्ध करने तैयार हूँ। आवश्यक प्रबंध कीजिये" मालिनी गरजी।

महाराज को तुरंत विजय की याद आयी। अपने अंगरक्षकों को आज्ञा दी कि विजय तक्षण ही पातालगृह से लाया जाय।

विजय लाया गया। अपने पति को देखते ही मालिनी ने अपना पुरुष वेष उतार दिया। कवच और शिरस्त्राण निकाल दिये। घुटने टेककर अपने पति के सम्मुख बैठ गयी। दुर्जन यह सब कुछ आश्चर्य से देखता रहा।

विजय ने बड़े प्रेम से अपनी पत्नी को उठाया और राजा के पास ले गया। राजा समझ गया कि यह स्त्री और कोई नहीं, बल्कि उसकी पत्नी ही है। विजय ने अपनी पत्नी का परिचय देतेहुए राजा से कहा "महाराज, यह मेरी धर्मपत्नी मालिनी है। अब तक आप यह जान भी गये होंगे कि मैंने अपनी पत्नी के बारे में, जो भी कहा, उसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

महाराज ने मालिनी के बुद्धिकौशल तथा पराक्रम की भरपूर प्रशंसा की।

दुर्जन ने उन्हें कुछ दिनों तक अपने यहाँ अतिथि बनाकर रखा और सादर उन्हें अपना राज्य भेज दिया।

प्रकृति : रूप अनेक
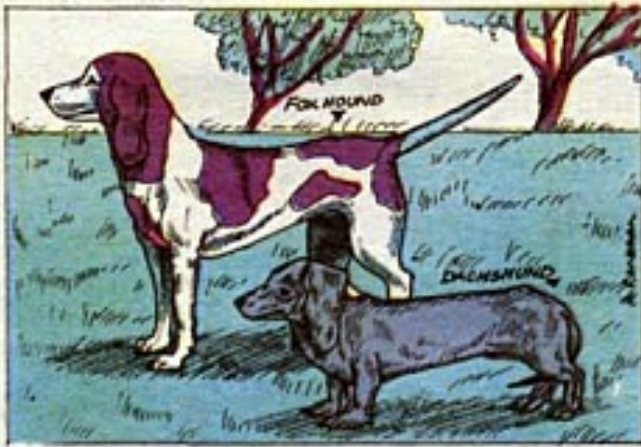
अपराधियों को पकड़नेवाले कुत्ते

हम अक्सर पढ़ा करते हैं कि अपराधियों को पकड़ने के लिए पुलिस कुत्तों को ले आयी है। ब्लडहौंड नामक जाति के ये कुत्ते बहुत ही होशियार कुत्ते हैं। इनकी सूँघने की शक्ति बहुत ही अद्‌भुत है। जिस जगह पर अपराध हुआ और जहाँ अपराधी घूमते रहे, वहाँ उनकी गंध के आधार पर वे उनका पता आसानी से लगा पाते हैं। ब्लडहौंड्स कई प्रकार के हैं। षाक्स हौंड, कून होड, बेसेंजी, बीगिल, बेसेट, आदि इनके नाम हैं। डाष हौंड नामक जाति के कुत्तों को प्रशिक्षण देना आसान है।

तिमिंगलों का शिकार

'ग्रीन पीस' नामक जहाज़ के कर्मचारियों ने तिमिंगलों का शिकार करनेवाले एक जहाज़ से एक तिमिंगल को बचाया। यह समाचार दैनिक-पत्रों में प्रकाशित भी हुआ है। आख़िर तिमिंगलों का शिकार किया क्यों जाता है? तिमिंगलों के बाहरी चर्म तथा अंदर के मांस-पेशियों के बीच चर्बी की एक घनी परत होती है। यह परत तिमिंगलों के लिए, ख़ासकर आर्काटिक

समुंदर के ठंडे पानी में उनके लिए दुपट्टे का काम करती है। उस चर्बी को गलाकर उससे रंगों और वार्निशों के उपयोग के लिए आवश्यक तेल निकाला जाता है। जापान आदि देशों में तिमिंगल का मांस भी खाते हैं।

कमल की पत्तियों पर चलनेवाला पक्षी

पानी पर चलनेवाले पक्षियों को क्या कभी आपने देखा है? आदमियों को देखते ही भाग जानेवाले ये 'जाकाना' पक्षी केवल पानी पर ही चलते नहीं रहते, बल्कि कमल के बडे-बडे पत्तों पर भी चलते दिखायी पड़ते हैं। उनके बड़े-बड़े पैरों के नाख़ून, उंगलियाँ तथा शरीर पानी पर तैरते हुए पत्तों पर संतुलन रखने में मदद पहुँचाते हैं। इसी कारण पत्ता डूब नहीं जाता। ये पक्षी काई के टुकड़ों से पत्तों पर ही घोंसले बनाते हैं।

Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

SUPER
RUBBER
It's time to go back to school again. Time for text
books. Time for games. Time to meet old friends.
And make new ones. Time to start studying
again. Because there's so much to learn about
the world around you.
From all of us here at Chandamama, have a
great year in school. And remember to tell us
what you've learnt everyday, when you
come home from school !
THE
CHANDAMAMA
COLLECTION
ARTIGI246

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, जनवरी, १९९५ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

S.G. Seshagiri

S.G. Seshagiri

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० नवंबर, '९४ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

सितंबर, १९९४, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **शब्द शब्द पढ़ बने महान**

दूसरा फोटो : **ईंट ईंट से बने मकान**

प्रेषक : **राजेंद्रप्रसाद चौबे, १७७, उपरेन गंज वार्ड,**

गोपाल बाग, जबलपुर, मध्यप्रदेश - ४८२००२

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.
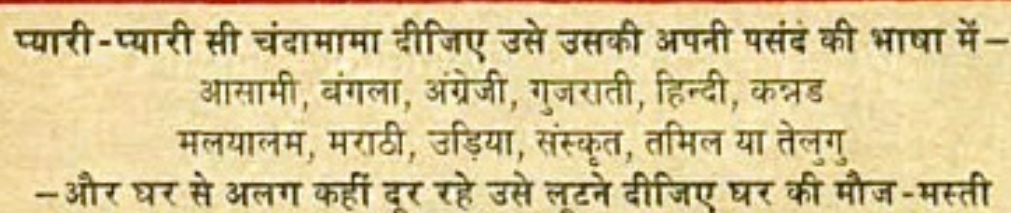
"हो गया न सब कुछ उल्टा-पुल्टा"

नया कुश्ती चैम्पियन सुपर एम

बम्बई, अक्तूबर 1994, हमारे विशेष संवाददाता द्वारा: "आखिर मेरी सुपर शक्ति का मजा उसने चख ही लिया" गरजते हुए बोला सुपर एम. सपीला सुल्तान को आखिरी गिनती तक जमीन पर दबोचकर जब वह बना नया कुश्ती चैम्पियन. अपनी जीत की सलामी में उसने सुपर मिल्क बिस्किट का पैकेट निकाला और मजे से मुंह में बिस्किट दबाया. फिर अपने सुपर अंदाज में बोला "बेचारा सुपर मिल्क की सुपर शक्ति और सुपर स्वाद से बिल्कुल अंजान था वर्ना..." फिर अपनी विजयी मुस्कान को दबाते हुए बोला "अगली बार पूरी तैयारी करना. फिर मैदान में आना... **चैलेंज के साथ!"**